मूल्य : 20/-

पंजी. संख्या : 153/2016-17

वर्ष : 2

मई 2017, विक्रमी सम्वत् 2074-75
सृष्टि सम्वत् 1960853118, दयानन्दाब्द 194

अंक : 11

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

युग प्रवर्तक महर्षि
दयानन्द सरस्वती
(1824-1883)

वीर सावरकर

श्यामजी कृष्ण वर्मा

स्वामी दीक्षानंद जी

उ.प्र. ग्राम्य विकास विशेष सचिव श्री सहदेव जी (आईएएस) को 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका भेंट करते ओमकार शास्त्री पत्रिका व्यवस्थापक।

आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में दिनांक 7-5-2017 को वर्ष 2017-18 के लिए हुए चुनाव में सर्व सम्मति से अधिकारी निर्वाचित हुए।

आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा का वार्षिक साधारण अधिवेशन में दिनांक 7-5-2017 को व चुनाव श्री आर.एल. लवानिया जी द्वारा सम्पन्न किए गए। जिसमें सर्वश्री रविन्द्र सेठ प्रधान, श्री विजेन्द्र कठपालिया उप प्रधान, श्रीमती लक्ष्मी सिन्हा उप प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल उप प्रधान, आर्य कै. अशोक गुलाटी महामंत्री, श्री नरेन्द्र सूद- कोषाध्यक्ष। महिला समाज : श्रीमती गायत्री मीना प्रधाना, श्रीमती ओमवती गुप्ता उप प्रधाना, श्रीमती आदर्श बिश्वनोई मंत्रीणी, श्रीमती संतोष लाल कोषाध्यक्ष सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए- तदर्थ बधाई- संपादक।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्री रविन्द्र सेठ 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
महामंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी

प्रधान संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं प्रधान संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMU-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति : 20/-	वार्षिक : 250/-
पांच वर्ष : 1100/-	आजीवन : 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	शुभकामना संदेश : स्वामी आर्यवेश	2
2.	संपादकीय : **ओ३म्**	3
3.	जीवन में सोलह संस्कारों...	4
4.	बनाने वाले को जानो	5-6
5.	भारतीय संस्कृति दर्शन	7
6.	ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना	8-9
7.	आर्य समाज का तीसरा नियम	12-13
8.	वेदारम्भसंस्कारे पितृ-उपदेशः	14
9.	स्वामी श्रद्धानंद	15
10.	क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा	16-17
11.	वीर सावरकर जयंती	19
12.	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के जन्म...	20

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। अपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा
गौतमबुद्धनगर, (उप्र)
: दूरभाष :
0120-2505731

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

पत्रांक :-फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/17/ 826

दिनांक:-20-04-2017

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आर्य समाज नोएडा ने **'विश्ववारा संस्कृति'** नाम से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया है। हमारी भारतीय संस्कृति का पृष्ठ पोषण प्रत्येक राष्ट्रवादी पुरुष का मुख्य कर्त्तव्य है। क्योंकि आज हमारी प्राचीन संस्कृति को मिटाने का षड्यन्त्र बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। आपने उक्त पत्रिका का नाम 'विश्ववारा संस्कृति' रखकर अपने उद्देश्य को स्पष्ट कर दिया, यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप अपनी पत्रिका में आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों के साथ–साथ भारतीय प्राचीन संस्कृति की प्रगति के लिए विशेष सामग्री प्रकाशित करेंगे। प्रकाशन की सफलता की हम प्रभु से कामना करते हैं। पत्रिका की एक प्रति अवलोकनार्थ सभा कार्यालय में अवश्य भेजें।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान
मो.:–0–9013783101

सेवा में,

कैप्टन अशोक गुलाटी
प्रबन्ध सम्पादक, 'विश्ववारा संस्कृति
बी–69, सैक्टर–33, नोएडा–201301 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

आर्य समाज की स्थापना भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी क्रांतिकारी घटना है। जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था- भारत माता त्राहि-त्राहि कर रही थी। एक तरफ जहां भारत माता की संस्कृति को विदेशी नष्ट-भ्रष्ट करना चाहते थे दूसरी तरफ भारतवासी स्वयं अनेक कुरीतियों के शिकार थे। अज्ञान, अविद्या, अंधविश्वास, अधर्म के गर्त में पड़े हुए अनेक भारतीय जन जीवन का उद्देश्य भूल चुके थे। धर्म के नाम पर पाखंड, आडम्बर अपने चरम पर था। स्त्रियों की पूजा करने वाले भारत के लोग उन्हें पैरों की जूती समझने लगे थे, बाल विवाह के कुचक्र ने स्त्रियों के जीवन को नारकीय बना दिया था।

बाल विधवाओं का बड़ा समूह यातनापूर्वक जीवन जीने को मजबूर बना दिया था। देवदासी के रूप में आश्रमों एवं मंदिरों में वासना के भूखे भेड़िये उनका शोषण करते थे। पति की मृत्यु होने पर बलात निर्अपराध स्त्री को सती प्रथा के नाम पर जिंदा जलाया जाता था। हिन्दू धर्म अनेक कुरीतियों से ग्रस्त था। तथाकथित ब्राह्मणों ने वीर भारतीयों को धर्मभीरु बनाकर कायरता पूर्ण जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया था। जातिवाद, छुआछूत, अस्पृश्ता के कुचक्र में लोग दिग्भ्रमित हो गए थे। समाज में संगठन, प्रेम, सौहार्द का वातावरण समाप्त हो गया था। छुआछूत जैसी बीमारियों ने भारतीय जन मानस को मानो घृणा से भर दिया था। गौ हत्या जैसा पाप सरेआम होता था। विदेशी धूर्त सरेआम महिलाओं को उठाकर ले जाते थे। बीमार मानसिकता के कारण भारतवर्ष पतन के गर्त में गिरता ही जा रहा था। ऐसे समय आवश्यक था कि किसी महानायक या किसी महापुरुष का जो इन सभी समस्याओं का समाधान कर सके।

परमात्मा की असीम कृपा से महर्षि दयानंद सरस्वती का पदार्पण भारत भूमि पर हुआ। महर्षि ने चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन काकड़वाड़ी मुंबई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के उदय के साथ ही देश की परिस्थितियां बदलती चली गयी। आर्य समाज के जागरूक लोगों ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा अविद्या, अज्ञान, कुरूति और अंधविश्वास की मजबूत दीवार को गिरा-कर नये आधुनिक भारत का निर्माण किया।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

हिन्दू धर्म अनेक कुरीतियों से ग्रस्त था। तथाकथित ब्राह्मणों ने वीर भारतीयों को धर्मभीरु बनाकर कायरता पूर्ण जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया था। जातिवाद, छुआछूत, अस्पृश्यता के कुचक्र में लोंग दिग्भ्रमित हो गए थे। समाज में संगठन, प्रेम सौहार्द का वातावरण समाप्त हो गया था। छुआछूत जैसी बीमारियों ने भारतीय जन मानस को मानो घृणा से भर दिया था। गौ हत्या जैसा पाप सरेआम होता था। विदेशी धूर्त सरेआम महिलाओं को उठाकर ले जाते थे। बीमार मानसिकता के कारण भारतवर्ष पतन के गर्त में गिरता ही जा रहा था। ऐसे समय आवश्यक था कि किसी महानायक या किसी महापुरुष का जो इन सभी समस्याओं का समाधान कर सके। परमात्मा की असीम कृपा से महर्षि दयानंद सरस्वती का पदार्पण भारत भूमि पर हुआ।

जीवन में सोलह संस्कारों का महत्व

प्रबंध संपादक
महामंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी

संस्कार का अर्थ

संस्कार शब्द 'सम्' पर उपसर्ग 'कृ' धातु से 'घम्' प्रत्यय करने से बनता है। पाणिनी ने अलंकार अर्थ में और भाव अर्थ में प्रयोग किया है। पहले प्रयोग के अनुसार संस्कार का अर्थ है- जिससे शरीर आदि सुभूषित हो, उन्हें संस्कार कहते हैं। दूसरे प्रयोग के अनुसार 'संस्करणं गुणान्तराधानं संस्कारः अर्थात् अन्य गुणों के आधान को संस्कार कहते हैं।

किसी भू-भाग पर बाग लगाना हो तो उसके लिए भूमि के अनुसार यत्न करना पड़ता है। भूमि समतल करने से लेकर बीज, खाद, पानी डालने के अतिरिक्त उसकी सुरक्षा और बढ़ोतरी के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। इसी प्रकार माता के गर्भ से बाहर आने के पश्चात् बालक के लिए सुकोमल भूमि ही तो है। इस पर जिस प्रकार का उद्यान लगाना हो लगाया जा सकता है। बालक कई जन्मों के अशुभ संस्कारों को लेकर जन्म लेता है। साथ ही इस जन्म में भी दुर्गुण, अनेक बुरे संस्कार को दूर करने, आत्मा को शुद्धि एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समय-समय पर विभिन्न संस्कार किए जाते हैं।

सोलह संस्कार-जीवन के आधार

वैदिक धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्व है। मानव जीवन को उच्च, दिव्य, महान एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए तथा मानव को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु प्रर्यन्त भिन्न-भिन्न समय पर संस्कारों की व्यवस्था प्राचीन ऋषि-मुनियों ने बड़े ही सुंदर ढंग से की है। स्वामी दयानंद जी ने निम्न १६ संस्कारों का विधान किया है।

गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीतोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, कर्णवेध संस्कार, उपनयन संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, समावर्त्तन संस्कार, विवाह संस्कार, वानप्रस्थाश्रम संस्कार, सन्यास संस्कार, अन्त्येष्टि कर्म संस्कार।

संस्कारों से ही मानव द्विज बनने का अधिकारी होता है।

महर्षि मनु ने लिखा है- **''वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैनिषेकादिर्द्विजन्मनाम्।**
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य प्रेह च।'' मनु. २.२६

अर्थात् द्विजों के गर्भाधान आदि संस्कार वैदिक पुण्य कर्मों के द्वारा सम्पन्न होने चाहिए, क्योंकि इस लोक तथा परलोक में पवित्र करने वाले संस्कार हैं। स्वामी दयानंद जी ने संस्कार विधि की भूमिका में संस्कारों का महत्व इस प्रकार बताया है- जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और संतान अत्यंत योग्य होती हैं।

इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों के लिए अति उचित हैं। जीवात्मा अमर तथा नित्य है। जन्म जन्मांतरों में उसके साथ सूक्ष्म शरीर मुक्ति पर्यंत रहता है और यही सूक्ष्म शरीर जन्म-जन्मांतरों के संस्कारों या वासनाओं का वाहक होता है। ये संस्कार शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता है, उसकी नई परिस्थिति के भी बहुत से शुभ-अशुभ प्रभाव मिलते हैं। उनमें बुरे प्रभावों को दबाने एवं शुभ प्रभावों को उन्नत कराने के लिए संस्कारों तथा स्वच्छ वातावरण की परमावश्यकता है। माता-पिता के शुद्ध आहार व शुद्ध विचारों का बालक पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बालक के पूर्व जन्म के अशुभ संस्कार पवित्र वातावरण को पाकर वैसे ही ओझल हो जाते हैं जैसे पोदिना या धनिया के पौधे वर्षा की प्रतिकूल परिस्थिति को पाकर मुरझा जाते हैं और वर्षा के बाद अनुकूल परिस्थिति पाकर फिर से प्रस्फुटित व विकसित हो जाते हैं।

यदि पूर्व जन्म के संस्कार के साथ गर्भ अवस्था में भी माता-पिता अच्छे संस्कार पड़ने दें, अपना खान-पान शुद्ध, आहार-विहार पवित्र रखें तथा जन्म के बाद भी उत्तम वातावरण मिले तो ऐसे बच्चे महाभाग्यशाली होते हैं। महर्षि दयानंद ने लिखा है- 'वह संतान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों।'

इस समय संस्कारों की घोर उपेक्षा हो रही है। आज सोलह संस्कारों के स्थान पर दो-तीन संस्कार ही रह गए हैं और वे भी विधिपूर्वक नहीं कराए जाते। संस्कारों को गौण समझा जाता है। जब माता-पिता इन्हें प्रमुखता से सम्पन्न कराएंगे संतान तभी सुसंस्कारित होगी। श्रवण कुमार या राम-भरत जैसे पुत्रों के लिए माता-पिता को सभी संस्कारों को विधिपूर्वक अपनाना पड़ेगा, नहीं तो संस्कारहीनता बढ़ती जाएगी और परिवार, समाज और राष्ट्र रसातल की ओर बढ़ता जाएगा। अधः पतन से कोई नहीं रोक सकता।

> **जिस इंसान ने अहंकार किया, उसका विनाश होना निश्चित है। - स्वामी दयानन्द सरस्वती**

बनाने वाले को जानो

वेदरत्न डॉ. सत्यव्रत राजेश

वेद एक मंत्र है जो सृष्टि बनाने वाले को जानने तथा न जानने के कारणों पर प्रकाश डालता है-

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माक-रमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतुप उक्थशासश्चरन्ति।। यजु. 19.31

अर्थात् जो लोग (सम न विदथ) उसे नहीं जानते (यः इमा-इमानि) जिसने इन लोक लोकांतरों को (जजान) उत्पन्न किया है। (अन्यत्) वह अपने से भिन्न है तथा (युष्माकम् अंतरं बभूव) तुम्हारे अंदर विराजमान है। आप लोग (नीहारेण प्रावृताः) अज्ञान के कोहरे से ढ़के हुए (जल्प्याः) मिथ्यावाद = बकवाद में फंसे हुए (असुतृपः) प्राणापोषण में रत (च उक्थशासः चरन्ति) तथा केवल विषय भोगों के लिए अवैदिक कर्म करने में प्रवृत्त हो रहे हो।

मंत्र के प्रथम भाग में जहां मानव को सावधान किया गया है कि आपने मानव शरीर पाकर भी यदि प्रभु को न जाना तो जीवन में क्या किया अर्थात् मानव जीवन को व्यर्थ ही खोया, वहां तीन सत्ताओं की ओर भी संकेत किया है। उनमें एक तो हैं वे जिन्होंने नहीं जाना। दूसरे वे हैं जिनको नहीं जाना तथा तीसरे वे हैं जिनको उत्पन्न किया। न जानने वाले जीव हैं, जिनको नहीं जाना वे परमपिता परमेश्वर हैं तथा उत्पन्न होने वाले तत्व प्राकृतिक पदार्थ हैं। इस प्रकार परमात्मा, जीव एवं प्रकृति का अर्थात् त्रैतवाद का भी इसमें बिना नाम लिए संकेत कर दिया है।

दूसरे जो लोग जीव तथा ब्रह्मा की एकता का समर्थन करते हैं तथा मान्यता रखते हैं, उनके लिए 'अन्यत्' शब्द स्पष्ट संदेश दे रहा है कि वह तुमसे भिन्न है। वस्तुतः जीव एवं ब्रह्म का संबंध पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक तथा व्यापक व्याप्य, उपास्य उपासक का बन सकता है, दोनों की एकता का नहीं। क्योंकि ब्रह्म सर्वम है, जबकि जीव अल्पज्ञ या बहुज्ञ है। ब्रह्म सर्वशक्तिमान है तथा जीव अल्पसामर्थ्य वाला। ब्रह्म आनंद स्वरूप है तथा जीव आनंद रहित। इसी प्रकार ब्रह्म अकाय, सर्वव्यापक, आवृणं, शुद्ध, अपापविद्ध, परिभू, स्वयंभू, वेद ज्ञान का दाता, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कर्ता, जीवों को कर्मानुसार फलदाता, निराकार, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अजर, अमर, अभय, नित्यपवित्रादि गुणयुक्त है तथा जीव इन गुणों से रहित। अतः वह अन्य है, भिन्न है, जीव से पृथक सत्ता है।

कुछ सज्जन जीवन तथा ब्रह्म में अंश अंशी भाव मानते हैं। वे जीव को ब्रह्म का अंश मानते हैं। किंतु वेद 'अन्यत्' की कर उसका भी निषेध कर देता है, क्योंकि अंश अंशी में परिणाम भेद हो सकता है, गुणभेद नहीं। चांदी या सोने की सिल्ली में से थोड़ा भाग काट लिया जाए तो इन अंश अंशी में कम तथा अधिक, छोटा तथा बड़ा, ये परिणाम भेद तो हो सकते हैं किंतु निष्कर्ष पर परख कर देखा जाए तो दोनों में गुणभेद नहीं मिलेगा। जो गुण छोटे से टुकड़े में हैं, वही पूरी सिल्ली में मिलेंगे तथा जो गुण सिल्ली में हैं वे ही टुकड़े में, अंश में, मिलेंगे। हम एक कुएं से लोटा भर पानी निकालें, इन दोनों परिणाम भेद तो है, एक लोटा भर जल है तथा दूसरा कुआं भर जल। किंतु इनमें गुणभेद नहीं होगा। यदि लोटे का जल मीठा है तो कुएं का जल भी मीठा होगा तथा यदि खारा है तो कूपजल भी खारा होगा। यही नियम स्वच्छ या अस्वच्छ में भी लागू होगा। यदि जीव, ब्रह्म का अंश होता तो उसमें अज्ञान, अल्पज्ञता आदि गुण क्यों होते? अतः वेद का अन्यत् पद दोनों की भिन्नता का स्पष्ट सूचक है।

तीसरी बात कही गई है कि 'युष्माकम् अंतरम बभूव'- वह तुम्हारे अंदर विराजमान है। यह उन लोगों के लिए संकेत है जो परमात्मा की खोज में बाहर भटकते रहते हैं। मानव काशी काबा, यरुशलम, हरिद्वार, गंगोत्री, अमरनाथ, कैलाशादि स्थानों पर उसे खोजने, उसका दर्शन करने ही तो जाते हैं।

वेद का उस प्रवृत्ति वालों के लिए संदेश है कि बाहर के व्यर्थ के श्रम में क्यों जीवन की अमूल्य घड़ियों को बर्बाद करते हो, वह तो आपके अंदर ही है। उससे मिलना है तो अंदर झांको, अंदर देखो, अंदर खोजो, वह अंदर ही मिलेगा।

एक प्रश्न यह होता है कि वेद एक ओर तो परमात्मा को सर्वव्यापक बताता है तथा दूसरे उसे अंदर बता रहा है, क्या यह विरोधाभास नहीं है? इसका उत्तर यह है कि परमात्मा यद्यपि सर्वव्यापक है। वह अंदर भी है तथा बाहर भी। किंतु प्रभु मिलन के अभिलाषी को उसे अंदर ही ढूंढना पड़ेगा। वह तो सर्वव्यापक है, किंतु उससे मिलने वाला जीव तो सर्वव्यापक नहीं है। वह तो एकदेशी

जो लोग जीव तथा ब्रह्मा की एकता का समर्थन करते हैं तथा मान्यता रखते हैं, उनके लिए 'अन्यट' शब्द स्पष्ट संदेश दे रहा है कि वह तुमसे भिन्न है। वस्तुतः जीव एवं ब्रह्म का संबंध पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक तथा व्यापक व्याप्य, उपास्य उपासक का बन सकता है, दोनों की एकता का नहीं। क्योंकि ब्रह्म सर्वम है, जबकि जीव अल्पज्ञ या बहुज्ञ है। ब्रह्म सर्वशक्तिमान है तथा जीव अल्पसामर्थ्य वाला। ब्रह्म आनंद स्वरूप है तथा जीव आनंद रहित। इसी प्रकार ब्रह्म अकाय, सर्वव्यापक, अव्रण, शुद्ध, अपापविद्ध, परिभू, स्वयंभू, वेद ज्ञान का दाता, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कर्ता, जीवों को कर्मानुसार फलदाता, निराकार, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अजर, अमर, अभय, नित्यपवित्रादि गुणयुक्त है तथा जीव इन गुणों से रहित। अतः वह अन्य है, भिन्न है, जीव से पृथक सत्ता है। कुछ सज्जन जीवन तथा ब्रह्म में अंश अंशी भाव मानते हैं। वे जीव को ब्रह्म का अंश मानते हैं। किंतु वेद 'अन्यत' कर उसका भी निषेध कर देता है, क्योंकि अंश अंशी में परिणाम भेद हो सकता है, गुणभेद नहीं। चांदी या सोने की सिल्ली में से थोड़ा भाग काट लिया जाए तो इन अंश अंशी में कम तथा अधिक, छोटा तथा बड़ा, ये परिणाम भेद तो हो सकते हैं किंतु निष्कर्ष पर परख कर देखा जाए तो दोनों में गुणभेद नहीं मिलेगा। जो गुण छोटे से टुकड़े में हैं, वही पूरी सिल्ली में मिलेंगे तथा जो गुण सिल्ली में हैं वे ही टुकड़े में, अंश में, मिलेंगे। हम एक कुएं से लोटा भर पानी निकालें, इन दोनों परिणाम भेद तो है, एक लोटा भर जल है तथा दूसरा कुआं भर जल। किंतु इनमें गुणभेद नहीं होगा।

कुहरा एक ऐसी अवस्था ला देता है कि जब वह कुछ कम मात्रा में होता है तो वस्तु के स्वरूप को धुंधला कर दिखाता है तथा तीव्र होने पर वस्तु को नेत्रों से ओझल कर देता है। तब पास की वस्तु भी दिखलाई नहीं देती। अज्ञान भी जब कम होता है तो हम परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को जान नहीं पाते तथा घने अज्ञान में तो उसका स्वरूप सर्वथ ओझल हो जाता है। यहां तक कि सृष्टि की अद्भुत रचना तथा जीवों के कर्मभोग की व्यवस्था को सर्वत्र देखते हुए भी हम ईश्वर नहीं है, यह कहने लगता हैं तथा उसके अस्तित्व को नकार देते हैं, नास्तिक बन जाते हैं। यह अज्ञान की पराकाष्ठा है तथा ऐसे हैं जैसे अपने पिता के अस्तित्व की अस्वीकृति। अज्ञान संसार के मानवों का सबसे बड़ा शत्रु है।

है। वह शरीर से बाहर नहीं है, अपितु अंदर है। मिलन वहीं हो सकता है जहां दोनों हों। ब्रह्म तो 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वास्य ब्राह्यतः'- बाहर भीतर सर्वत्र है, किंतु जीव तो शरीर के अंदर तथा एकदेशी है। अतः साधक उसको ढूंढ़ने में बाह्य प्रयत्न करके आंतरिक प्रयत्न करे। धारणा, ध्यान तथा समाधि का प्रयत्न करे।

इसका विद्वान अन्य समाधान भी करते हैं। गीता में श्रीकृष्ण जी भी ईश्वर को सब प्राणियों के हृदय में स्थित बतलाते हैं-

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

विद्वान कहते हैं कि जागृत अवस्था में जीवात्मा शरीर के मस्तिष्क भाग में रहता है, स्वप्न में कण्ठ में तथा सुषुप्ति एवं समाधि में हृदय में रहता है। मिलन समाधि अवस्था में ही होता है। उस समय सर्वव्यापक से मिलन होने के कारण उसे गीता ने हृदयस्थ तथा वेद ने अंदर बतलाया है। आगे ज्ञान में आने वाली उन बाधाओं का वेद उल्लेख करता है। उनमें से प्रभु के ज्ञान तथा मिलन की पहली बाधा है- 'नीहारेण प्रवृताः' अर्थात् अज्ञान के कुहरे से आच्छादित अंतःकरण। कुहरा एक ऐसी अवस्था ला देता है कि जब वह कुछ कम मात्रा में होता है तो वस्तु के स्वरूप को धुंधला कर दिखाता है तथा तीव्र होने पर वस्तु को नेत्रों से ओझल कर देता है। तब पास की वस्तु भी दिखलाई नहीं देती। अज्ञान भी जब कम होता है तो हम परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को जान नहीं पाते तथा घने अज्ञान में तो उसका स्वरूप सर्वर्थ ओझल हो जाता है। यहां तक कि सृष्टि की अद्भुत रचना तथा जीवों के कर्मभोग की व्यवस्था को सर्वत्र देखते हुए भी हम ईश्वर नहीं है, यह कहने लगता हैं तथा उसके अस्तित्व को नकार देते हैं, नास्तिक बन जाते हैं। यह अज्ञान की पराकाष्ठा है तथा ऐसे हैं जैसे अपने पिता के अस्तित्व की अस्वीकृति। अज्ञान संसार के मानवों का सबसे बड़ा शत्रु है। वेद का संदेश है प्रभु को जानने के लिए अज्ञान का पर्दा- बुद्धि से हटाओ तब आपको उस अंतर्यामी का ज्ञान हो सकेगा।

ईश्वर ज्ञान में दूसरी बाधा बतलायी है- जल्पी होना। सार्थक वार्तालाप को वाद कहते हैं तथा निरर्थक वार्तालाप को जल्प कहते हैं, जिसमें तथ्य की तह तक न पहुंचकर अपना ज्ञान बघारना तथा दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति रहती है। लोक भाषा में इसे बकवास कहते हैं- बेमतलब की बात, न बात का सिर न पैर। उसका उपचार हां कह देना है, अन्यथा बिना बात का झगड़ा मोल लो। भारत तथा इंग्लैंड का मैच था। मोहनलाल नामक व्यक्ति के पास उसका एक मित्र आया और कहा कि मोहन देखना कल मैच में इंग्लैंड जीतेगा, बहुत अच्छी टीम है उसकी। मोहनलाल ने हां में सिर हिलाते हुए कहा आप ठीक कहते हैं। दूसरा आया और उसने कल भारत की टीम की विजय बताई। उसे भी मोहन ने कहा, आप ठीक कहते हैं। तीसरे ने मैच ड्रा होने बताया, उसको भी मोहन ने आप ठीक कहते हैं, कहा।

उसका बेटा सब सुन रहा था। उसने पूछा कि पिता जी आप ने तीनों को ठीक कह दिया, क्या तीनों बातें ठीक हो सकती हैं? उसने उसे भी कहा आप भी ठीक कहते हैं। कारण पूछने पर कहा कि कल होने वाली अनिश्चित घटना के लिए बहस करना क्या बुद्धिमानी है। यह होगा, यह न होगा में उलझने की अपेक्षा कल जो होगा देख लेना। यह जल्प की, अनर्थक बकवास की प्रवृत्ति भी तथ्य ज्ञान में बाधक है।

OO

खेल के लाभ

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

1. खेल से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आज अधिकांश बीमारियां खेल न खेलने के कारण हैं।
2. खेल से हिसा और क्रोध की वृत्ति शांत होती है। हॉकी, क्रिकेट या फुटबाल में जब हम गेंद का हिट मारते हैं ता उससे क्रोध और हिसा वृत्ति शांत होती। आज विश्व में सारे छात्र क्रोध और हिसा से भरे हुए हैं, केवल इंग्लैंड एक ऐसा देश है, जहां छात्र शांत हैं, और अनुशासन में हैं, क्योंकि वहां पर प्रत्येक छात्र को अपने स्कूल या कॉलेज में प्रतिदिन दो घंटे खेल खेलने का नियम अनिवार्य है।
3. खेल में तन और मन का विभाजन समाप्त होता है, खेल ध्यान और साधना जैसा फलदायी है। स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने साहित्य में लिखा है-

One is nearer to heaven through fooot bal than through the study of Geeta.

गीता का स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा फुटबाल खेलने वाला परमात्मा के अधिक निकट है।

सृष्टि के नियम खेल के भी हो सकता हैं। खेल के बिना नियमों के भी हो सकता है। अराजकता भी नियम का एक पहलू है।

प्रकृति के कण-कण में गति है, इसी को श्री अरविंद घोष ने खेल न कहकर एक महान नृत्य कहा है, तथा मनुष्य ने अहंकारवश उस नृत्य से अपना संबंध तोड़ लिया। आज हम खेल और नृत्य केवल देख सकते हैं। स्वयं उसमें भाग नहीं ले सकते। उत्सव को मनोरंजन बनाकर सुखी होने के लिए एक पराधीनता पैदा कर ली है। संसार कर्मो का खेल है। विद्वान के लिए ज्ञान शब्दों का खेल है। क्षत्रिय के लिए युद्ध गोली का खेल है। धनवान वह है जो धन से खेले अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर अपने लिए और दूसरों के लिए खर्च करे। केवल पैसों को सम्भाल कर रखने वाला तो धन का चौकीदार है।

भारतीय संस्कृति दर्शन

संस्कृति एक ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किन्तु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में वह सभ्यता से भिन्न गुण है। अंग्रेजी में कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है। मोटर, महल, सड़क, हवाई, जहाज, पोशाक और अच्छा भोजन-ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएं संस्कृति नहीं, सभ्यता के समान हैं। मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है वह संस्कृति की चीज है। इसी प्रकार मोटर बनाने और उसका उपयोग करने, महलों के निर्माण में रुचि का परिचय देने और सड़कों तथा हवाई जहाजों की रचना में जो ज्ञान लगता है, उसे अर्जित करने में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है।

हर सुसभ्य आदमी सुसंस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और तबीयत से नंगा होना संस्कृति के खिलाफ बात है। और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर सुसंस्कृत आदमी सभ्य भी होता है, क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट-बाट हैं। मगर बहुत-से ऐसे लोग हैं जो सड़े-गले झोंपड़ों में रहते हैं, जिनके पास कपड़े भी नहीं होते और न कपड़े पहनने के अच्छे ढंग ही उन्हें मालुम होते हैं, लेकिन फिर उनमें विनय और सदाचार होता है, वे दूसरों के दुख से दुखी होते हैं तथा दुख को दूर करने के लिए वे खुद मुसीबत उठाने को भी तैयार रहते हैं। और हमेशा मुसीबत में काम आते हैं, उनमें एक-दूसरे के प्रति अच्छे विचार एवं सहयोग की भावना रहती है।

भारत की संस्कृति में सब कुछ है जैसे विरासत के विचार, लोगों की जीवन शैली, मान्यताएं, रीति-रिवाज, मूल्य, आदतें, परवरिश, विनम्रता, ज्ञान आदि। भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है जहां लोग अपनी पुरानी मानवता की संस्कृति और परवरिश का अनुकरण करते हैं। संस्कृति दूसरों से व्यवहार करने का, सौम्यता से चीजों पर प्रतिक्रिया करने का, मूल्यों के प्रति हमारी समझ का, न्याय, सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का एक तरीका है। पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को नयी पीढ़ी को सौंपते हैं। इसलिये सभी लोग यहां पर अच्छे से व्यवहार करते हैं क्योंकि उनको ये संस्कृति और परंपराएं पहले से ही उनके माता-पिता और दादा-दादी से मिली होती हैं। हम लोग यहां सभी चीजों में भारतीय संस्कृति की झलक देख सकते हैं जैसे नृत्य, संगीत, कला, व्यवहार, सामाजिक नियम, भोजन, हस्तशिल्प, वेशभूषा आदि। भारत एक बड़ा पिघलने वाला बर्तन है, जिसके पास विभिन्न मान्यताएं और व्यवहार है जो कि अलग-अलग संस्कृतियों को यहां जन्म देता है।

लगभग पांच हजार वर्ष पहले से ही विभिन्न धर्मो की उत्पत्ति की अपनी जड़ें है। ऐसा सभी लोग मानते हैं कि वेदों से हिन्दू धर्म का आरंभ हुआ है। हिन्दू धर्म के सभी पवित्र धर्मग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये है। ये भी माना जाता है कि जैन धर्म का आरंभ प्राचीन समय से है और इसका अस्तित्व सिन्धु घाटी में था। बुद्ध एक दूसरा धर्म है जिसकी उत्पत्ति भगवान गौतम बुद्ध की शिक्षा के बाद अपने देश में हुयी है। ईसाई धर्म को यहाँ अंग्रेज और फ्रांसीसी लेकर आये जिन्होंने लगभग 200 वर्ष के लंबे समय तक यहां पर राज किया। इस तरीके से विभिन्न धर्मो की उत्पत्ति यहां प्राचीन समय से या किसी तरह से यहां लायी गयी है। हालांकि, अपने रीति-रिवाज और मान्यताओं को बिना प्रभावित किये सभी धर्मो के लोग शांतिपूर्ण तरीके से एक साथ रहते हैं।

कई युग आये और गये लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वो हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके। नाभिरज्जु के द्वारा पुरानी पीढ़ी की संस्कृति नयी पीढ़ी से आज भी जुड़ी हुयी है। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति हमेशा हमें अच्छा व्यवहार करना, बड़ों की इज्जत करना, मजबूर लोगों की मदद करना और गरीब और जरुरत मंद लोगों की मदद करना सिखाती है। ये हमारी धार्मिक संस्कृति है कि यज्ञ करें, ब्रह्मयज्ञ (संध्या) करें, सूर्य नमस्कार करें, परिवार के बड़ों सदस्यों का पैर छुएं, रोज ध्यान और योग करें तथा भूखे और अक्षम लोगों को अन्न-जल दें। हमारे राष्ट्र की ये महान संस्कृति है कि हम बहुत खुशी के साथ अपने घर आये मेहमानों की सेवा करते है क्योंकि मेहमान भगवान का रुप होता है इसी वजह से भारत में 'अतिथि देवो भवः' का कथन बेहद प्रसिद्ध है। हमारी संस्कृति की मूल जड़ इंसानियत और आध्यात्मिक कार्य है।

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

हिन्दू धर्म के सभी पवित्र धर्मग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये है। ये भी माना जाता है कि जैन धर्म का आरंभ प्राचीन समय से है और इसका अस्तित्व सिन्धु घाटी में था। बुद्ध एक दूसरा धर्म है जिसकी उत्पत्ति भगवान गौतम बुद्ध की शिक्षा के बाद अपने देश में हुयी है। ईसाई धर्म को यहाँ अंग्रेज और फ्रांसीसी लेकर आये जिन्होंने लगभग 200 वर्ष के लंबे समय तक यहां पर राज किया। इस तरीके से विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति यहां प्राचीन समय से या किसी तरह से यहां लायी गयी है।

धन्य भारतीय संस्कृति अपनी
प्रेम बहुत अधिकार नहीं है।
विकास, भला सबका चाहे जो,
ऐसा दावेदार नहीं है।।
छुआछूत का भाव न रखती,
धर्मों का सत्कार यहीं है।
ज्ञान भक्ति कर्मों का प्रांगण
मेरा चारोधाम यही है।।

जहां गंगा, यमुना, सरस्वती बहती हैं जिसके आंगन में
तीन ओर सागर लहराता, अडिग हिमालय प्रांगण में।।
जग में ऊंचा रहे तिरंगा, भारत मां का मान यही है।
जय-जय भारत देश हमारा, मेरा जीवन प्राण यही है।।
दूर देश में रहकर भी जो, राष्ट्र एकता प्रेम नहीं है।।
लानत ऐसे जीवन को है, वह सच्चा भारत वीर नहीं है।।

धन्य भारतीय संस्कृति

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना

आचार्य आनन्द मुनि

'स नः पितेव सूनवे...' हे सबके पालन करने वाले परमेश्वर! जैसे कृपा करने वाला कोई विद्वान मनुष्य अपने पुत्रों की रक्षा कर श्रेष्ठ शिक्षा देकर विद्या, धर्म, अच्छे स्वभाव और सत्य विद्या आदि गुणों में संयुक्त करता है, वैसे ही आप हम लोगों की निरंतर रक्षा करके श्रेष्ठ व्यवहारों में संयुक्त कीजिये।

मनुष्यों को अत्यंत उचित है कि इस सब जगत के उत्पन्न करने व सबसे उत्तम, सब दोषों के नाश करने (वाले) तथा अत्यंत शुद्ध परमेश्वर ही की स्तुति प्रार्थना और उपासना करें।

कोई भी मनुष्य ईश्वर की उपासना व प्रार्थना के बिना सब दुखों के अंत को नहीं प्राप्त हो सकता। क्योंकि वही परमेश्वर सब सुख पूर्वक निवास वा उत्तम सत्य निश्चयों को कराता है। इससे जैसी उसकी आज्ञा है, उसका पालन वैसा ही सब मनुष्यों को करना योग्य है।

किसी मनुष्य का परमेश्वर की उपासना के बिना शरीर, आत्मा और प्रजा का दुख दूर होकर सुख नहीं हो सकता। मनुष्य लोग ईश्वर को छोड़कर किसी का पूजन न करें, क्योंकि वेद से अविहित और दुखरूप फल होने से परमात्मा से भिन्न दूसरे किसी की उपासना न करनी चाहिए।

दीर्घ लम्बी (३०० से ४०० वर्ष की) आयु प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना और अपना पुरुषार्थ करना उचित है। सो प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए- 'हे जगदीश्वर! आपकी कृपा से जैसे विद्वान लोग विद्या, धर्म और परोपकार के अनुष्ठान से आनंद पूर्वक तीन सौ वर्ष पर्यन्त आयु को भोगते हैं, वैसे ही तीन प्रकार के ताप से शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूप अंतःकरण, इंद्रिय और प्राण आदि को सुख करने वाले विद्या, विज्ञान सहित आयु को हम लोग प्राप्त होकर तीन सौ वा चार सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक भोंगे।

न कदापि किसी मनुष्य को नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करना चाहिए। जो नास्तिक होकर ईश्वर का अनादर करता है, उसका सर्वत्र अनादर होता है। इससे सब मनुष्यों को आस्तिक बुद्धि से ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।

जिस वेद के जानने व पालन करने वाले परमेश्वर ने वेद विद्या, पृथ्वी, जल, वायु और सूर्य आदि शुद्धि करने वाले पदार्थ प्रकाशित किये हैं, उसकी उपासना तथा पवित्र कर्मों के अनुष्ठान से मनुष्यों को पूर्ण कामना और पवित्रता को सम्पादन अवश्य करना चाहिए।

सब मनुष्यों को उचित है कि सब करने योग्य उत्तम कर्मों के आरम्भ, मध्य और सिद्ध होने पर परमेश्वर की प्रार्थना सदा किया करें। जो लोग परमेश्वर की उपासना नहीं करते हैं, उनका विजय सर्वत्र नहीं होता। जो (राजा) अच्छी शिक्षा देकर शूरवीर पुरुषों का सत्कार करके सेना में नहीं रखते हैं, उनका सब जगह सहज में पराजय हो जाता है। इससे मनुष्यों को चाहिए कि दो प्रकार के प्रबंध अर्थात् एक तो परमेश्वर की उपासना और दूसरा वीरों की रक्षा सदा करते रहें।

मनुष्यों को अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए अनन्त विद्या के प्रकाश करने वाले परमेश्वर पिता का आह्वान अर्थात् अच्छी प्रकार नित्य सेवन करना चाहिए।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही वह जगदीश्वर सबको उपासीय अर्थात सेवन करने योग्य है। वैसे ज्ञान के बिना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती, क्योंकि विज्ञान की उसकी अवधि है।

सर्वत्र व्यापक और पदार्थों की शुद्धि करने हारे ब्रह्मा परमात्मा ही की उपासना करें, क्योंकि उसकी उपासना के बिना किसी को धर्म अर्थ काम मोक्ष से होने वाला पूर्ण सुख कभी नहीं हो सकता।

जो मनुष्य 'अपने हृदय में ईश्वर की उपासना' करते हैं वे सुंदर जीवन आदि के

कोई भी मनुष्य ईश्वर की उपासना व प्रार्थना के बिना सब दुखों के अंत को नहीं प्राप्त हो सकता। क्योंकि वही परमेश्वर सब सुख पूर्वक निवास वा उत्तम सत्य निश्चयों को कराता है। इससे जैसी उसकी आज्ञा है, उसका पालन वैसा ही सब मनुष्यों को करना योग्य है। किसी मनुष्य का परमेश्वर की उपासना के बिना शरीर, आत्मा और प्रजा का दुख दूर होकर सुख नहीं हो सता। मनुष्य लोग ईश्वर को छोड़कर किसी का पूजन न करें, क्योंकि वेद से अविहित और दुखरूप फल होने से परमात्मा से भिन्न दूसरे किसी की उपासना न करनी चाहिए। दीर्घ लम्बी (300 से 400 वर्ष की) आयु प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना और अपना पुरुषार्थ करना उचित है। सो प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए- 'हे जगदीश्वर! आपकी कृपा से जैसे विद्वान लोग विद्या, धर्म और परोपकार के अनुष्ठान से आनंद पूर्वक तीन सौ वर्ष पर्यन्त आयु को भोगते हैं, वैसे ही तीन प्रकार के ताप से शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूप अंतःकरण, इंद्रिय और प्राण आदि को सुख करने वाले विद्या, विज्ञान सहित आयु को हम लोग प्राप्त होकर तीन सौ वा चार सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक भोंगे। न कदापि किसी मनुष्य को नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करना चाहिए। जो नास्तिक होकर ईश्वर का अनादर करता है, उसका सर्वत्र अनादर होता है। इससे सब मनुष्यों को आस्तिक बुद्धि से ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। जिस वेद के जानने व पालन करने वाले परमेश्वर ने वेद विद्या, पृथ्वी, जल, वायु और सूर्य आदि शुद्धि करने वाले पदार्थ प्रकाशित किय हैं, उसकी उपासना तथा पवित्र कर्मों के अनुष्ठान से मनुष्यों को पूर्ण कामना और पवित्रता को सम्पादन अवश्य करना चाहिए।

सुखों को भोगते हैं और कोई भी पुरुष ईश्वर के आश्रय के बिना पूर्ण बल और पराक्रम को प्राप्त नहीं हो सकता।

मनुष्यों को जिस सत् चित् और आनंद स्वरूप, सब जगत् का रचने हारा, सर्वत्र व्यापक, सबसे उत्तम और सर्वशक्तिमान ब्रह्मा की उपासना से सम्पूर्ण विद्यादि अनंत गुण प्राप्त होते हैं फिर उसका सेवन क्यों न करना चाहिए।

जिस ब्रह्मा के जानने के लिए प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध सब लोक दृष्टांत हैं। जो सर्वत्र व्याप्त हुआ, सबका आवरण और सभी का प्रकाश करता है और सुंदर नियम के साथ अपनी अपनी कक्षा में सब लोकों को रखता है, वही अंतर्यामी परमत्मा सब मनुष्यों के निरंतर उपासना के योग्य है। इससे अन्य कोई पदार्थ सेवन योग्य नहीं।

इस प्रसिद्ध सृष्टि के रचने से प्रथम (पूर्व) परमेश्वर ही विद्यमान था, जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत का कारण (प्रकृति) अत्यंत सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एकरस स्थिर था।

जिसने सब जगत को रच के धारण किया और जो अंत समय में प्रलय करता है, उसी परमात्मा को उपासना के योग्य मानो। यह जगत ऐसा नहीं कि जिसका कर्ता, अधिष्ठाता वा ईश्वर कोई न होवे। जो ईश्वर सबका अंतर्यामी, सब जीवों के पाप पुण्यों के फलों की व्यवस्था करने हारा और अनंत ज्ञान का प्रकाश करने हारा है, उसी की उपासना से धर्म अर्थ काम और मोक्ष के फलों को सब मनुष्य प्राप्त होवें।

सब जगत के उत्पादक, न्यायकर्ता परमात्मा की स्तुति कर सुनें, विचारें और अनुभव करें एवं परमेश्वर की उपासना करके शांतिशील होवें। हे मनुष्यों! आप लोग जिसने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, डाकू मनुष्य भी रचे हैं, जिसने स्थूल तथा सूक्ष्म प्राणियों के शरीर, अत्यंत छोटे पशु और इनकी रक्षा के साधन पदार्थ रचे और जिसकी सृष्टि में न्यून विद्या और पूर्ण विद्या वाले विद्वान होते हैं, उसी परमात्मा की तुम लोग उपासना करो।

जिस परमेश्वर ने लोकों की रक्षा के लिए वनस्पति आदि औषधियों को रच के धारण और व्यवस्थित किया है, उसी की उपासना सब मनुष्यों को करनी चाहिए।

सब उत्तम कर्मों का अनुष्ठान कर और दुष्ट कर्मों को छोड़के परमेश्वर की उपासना से निरंतर आनंद किया करें।

मनुष्यों को चाहिए कि प्रेम भक्ति के साथ सब मंगलों के दाता परमेश्वर की ही उपासना करें, जिससे अपने अभीष्ट कार्य सिद्ध हों। सब मनुष्य लोग, जो सब जगत को रचने, धारण करने, पालने तथा विनाश करने और सब जीवों के लिए सब पदार्थों को देने वाला परमेश्वर अपनी व्याप्ति से आकाशादि में व्याप्त हो रहा है, उसी की उपासना करें।

जो सबसे सूक्ष्म, बड़ा, अतिश्रेष्ठ सबका धारण कर्ता, विद्वानों का विषय अर्थात् समस्त विद्याओं का समाधानरूप अनादि और चेतन मात्र है, वही ब्रह्मा उपासना करने योग्य है, अन्य नहीं।

जिस जगदीश्वर ने सबका आधार जो भूमि बनाई और वह सबको धारण करती है, वही ईश्वर सब मनुष्यों को उपासना करने योग्य है। जो सूर्य के समान स्वप्रकाश सब आत्माओं का प्रकाशक, महादेव जगदीश्वर है उसी की सब मनुष्य उपासना करें।

हे मनुष्यों! जिस शुद्ध सर्वत्र व्यापक, सबके प्रकाशक, जगत के उत्पादन, धारण, पालन और प्रलय करने हारे ब्रह्मा की उपासना करके तुम लोग जैसे आनंदित होते हो, वैसे इस (ब्रह्मा) को प्राप्त होके हम भी आनंदित होवें। जो ब्रह्मा एक चेतन मात्र स्वरूप, सबका अधिकारी, पाप रहित, ज्ञान से देखने योग्य, सर्वत्र व्याप्त, सबके साथ वर्तमान है, वही सब मनुष्यों का उपास्य देव है।

उपासना अर्थात् सेवा किया हुआ जड़ पदार्थ हानि, लाभ कारक और रक्षा करने हारा नहीं होता। इससे चित्तवान समस्त जीवों को चेतन स्वरूप जगदीश्वर ही की उपासना करनी योग्य है, अन्य जड़ता आदि गुणयुक्त पदार्थ उपास्य नहीं।

जब सृष्टि प्रलय को प्राप्त होकर प्रकृति में स्थिर होती है और उत्पन्न होती है। उसके आगे (पहले से ही) जो एक जागता हुआ परमात्मा वर्तमान रहता है, तब सब जीव मूर्च्छा सी पाए हुए होते हैं। वह (परमात्मा) कल्प के अंत में प्रकाश रहित पृथ्वी आदि सृष्टि तथा प्रकाश सहित सूर्य आदि लोकों की सृष्टि का विधान, धारण और सब जीवों के कर्मों के अनुकूल जन्म देकर सबके निर्वाह के लिए सब पदार्थों का विधान करता है। वही सबको उपासना करने योग्य देव है।

हे मनुष्यों! जिसके महिमा सामर्थ्य से सब जगत् विराजमान, जिसकी अनंत महिमा और जिसकी सिद्धि करने में रचना से भरा हुआ समस्त जगत दृष्टांत है, उसी की सब मनुष्य उपासना करें। जो सब से बड़ा, सबका प्रकाश करने हारा और ऐश्वर्य की प्राप्ति का हेतु है, वह ईश्वर सबको युक्ति (विधि) के साथ सेवन योग्य है।

विद्वान लोग उपदेश करें कि जिस सर्वशक्तिमान निराकार सर्वत्र व्यापक परमेश्वर की उपासना हम लोग करें तथा उसी को सुख और ऐश्वर्य का बढ़ाने वाला जानें, उसी की उपासना तुम लोग भी करो और उसी को सबकी उन्नति करने वाला जानो। सब मनुष्य वेदवेत्ता विद्वानों से सदा विद्या प्राप्ति की प्रार्थना किया करें, जिससे सब महत्व को प्राप्त होंवे।

जिस ईश्वर ने सब मनुष्यों के सुख के लिए धनों, वेदों और खाने पीने के योग्य वस्तुओं को उत्पन्न किया है, उसी की उपासना सब मनुष्यों को सदा करनी चाहिए। हे मनुष्यों, जिस पूर्ण परमात्मा में हम मनुष्य आदि के असंख्य सिर, आंखें, पग आदि अवयव हैं, जो भूमि आदि से उपलक्षित हुए पांच स्थूल और पांच सूक्ष्म भूतों से युक्त जगत् को अपनी सत्ता से पूर्ण कर जहां जगत नहीं, वहां भी पूर्ण हो रहा है। उस सब जगत के बनाने वाले परिपूर्ण सच्चिदानंद स्वरूप, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव परमेश्वर को छोड़ के अन्य की उपासना तुम कभी न करो, किंतु उस ईश्वर की उपासना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करो।

हे मनुष्यों! आप लोग जिससे सब वेद उत्पन्न हुए हैं, उस परमात्मा की उपासना करो। वेदों को पढ़ो और उसकी आज्ञा के अनुकूल वर्त्तके सुखी होओ। वेदों के अनेक स्थलों में जिसका महत्व कहा गया है, जो नहीं मरता, न विकृत होता है, न नष्ट होता, उसी की उपासना निरंतर करो। जो (यदि) इससे भिन्न की उपासना करोगे तो इस महान पाप से युक्त हुए आप लोग दुख क्लेशों से नष्ट होगे।

Gayatri Mantra and Scientific Implication

Gayatri Mantra and Mantra's Scientific Interpretation

Gayatri Mantra has been bestowed the greatest importance is vedic dharma. This mantra has also been termed as Savitri and Ved-Mata, the mother of the Vedas.

Om bhur bhuva swah
Tat savitur varenyam
Bhargo devasya dheemahi
Dhiy yo nah prachodayat

The literal meaning of the mantra is : O God! You are Omnipresent, Omnipotent and Almighty you are all Light. You are all knowledge and Bliss. You are Destroyer of fear, you are Creator of this Universe, you are the Greatest of all. We bow and meditate upon your light. You guide our intellect in the right dirction.

The mantra, however, has a great scientific importance too, which somehow got lost in the literary tradition. The modern astrophysics and astronomy tell us that our Galaxy called Milky way or Akash Ganga contains approximately 100,000 million of stars. Each star is like our sun having its own planet ystem. We know that the moon moves round the earth and the earth moves round the sun along with the moon. All planets round the sun. Each of the aove bodies revolves round at its own axis as well. Our sun along with its family takes one round of the galactic center in 22.5 crore years. All galaxies including ours are moving away at a terrific velocity of 20,000 miles per second.

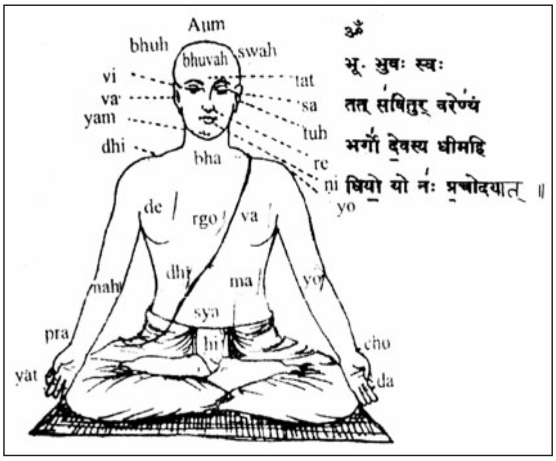

ओउम्

The alternative scientific meaning of the mantra Line by Line Line 1 : Om Bhur Bhuvah Swah : Bhur the earth, bhuvah the planets (solar family), swah the Galaxy. We ovserve that when an ordinary fan with a speed of 900 PRM (Rotations per Minute) moves, it makes noise. Then, one can imagine, what great noise would be created when the galaxies move with a speed of 20,000 miles per second. This is what this portion of the mantra explains that the sound produced due to the fast-moving earth, planets and galaxies is OM.

The sound was heard during meditation by Rishi Vishvamitra, who mentioned it to other colleagues. All of them, then unanimously decided to call this sound Om the name of God, because this sound is available in all the three periods of time, hence it is set (Permanent) Therefore, it was the first ever revolutionary idea to identify formless God with a specific title (form) called upadhi. Until that time, everybody recognized God as formless and nobody was prepared to accept this new idea. In the Gita also, it is said, "Omiti ekaksharam brahma", meaning that the name of

the Suprme is Om, which contains only one syllable (8/12). This sound Om heard during samadhi was called by all the seers nada-brahma a very great noise, but not a noise that is normally heard beyoud a specific the rishis called this sound udgith musical sound of the above, i.e., heaven. They also noticed that the infinite mass of galaxies moving with a velocity of 20,000 miles/second was generating a kinetic energy =1/2 MV2 and this was balancing the total energy consumption of the cosmos. Hence they named it Prnavah, which means the body (vapu) of store house of energy (Prana).

Savitur Varnyam : Tat that (God), savitur the sun (Star), varenyam worthy of bowing or respect. once the form of a person along with the name is known to us, may locate the specific person. Hence the two titles (upadhi) provide the solid ground to identify the formless God, Vishvamitra suggested. He told us that we could know (realize) the unknowable formless God through the known factors, viz., sound Om and light of suns (stars). A Mathematician can solve an equation x2+y2=4; if x=2; then y can be known and so on. An engineer can measure the width of a river even by standing at the riverbank just by drawing a triangle. So was the scientific method

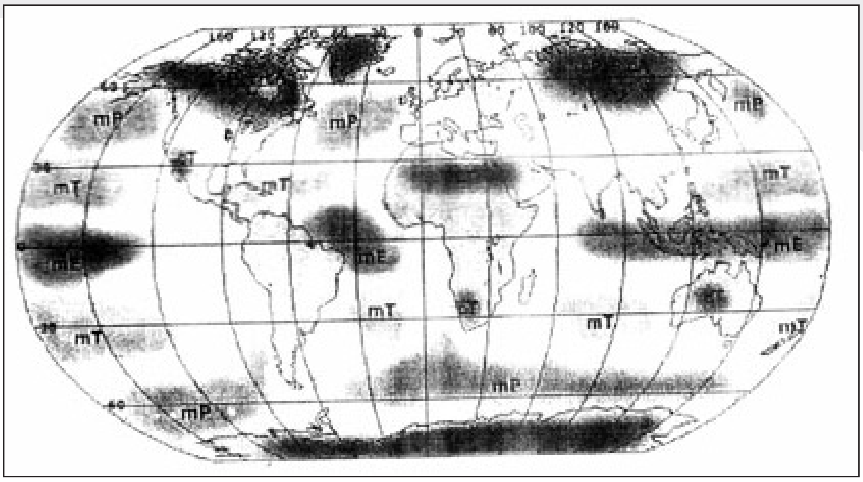

suggested by Vishvamitra in the mantra in the enxt portion as under- line-3.

Bhargo Devasya Dheemahi : Bhargo the light, devasya of the deity, dheemahi we should meditate. The rishi instructs us to meditate upon the avaliable form (light of suns) to discover the formless Creator (God). Also he wants us to do japa of the word Om (this is understood in the mantra). This is how the sage wants us to proceed, but there is a great problem to realize it, as the human mind is so shaky and restless that without the grace of the supreme (Brahma) it cannot be controlled. Hence Vishvamitra suggests the way to pray him as under : **Line 4.**

Dhiyo yo nah Prachodayat Dhiyo (intellect), yo (who), nah (we all), prachodayat (guide to riht Direction). O God! Deploy our intellect on the right path. Full scientific interpretation of the Mantra : the earth (bhur), the planets (bhuvah), and the galaxies (swah) are moving at a very great velocity, the sound produced is Om, (the name of formless God). That God (tat), who manifests Himself in the form of light of suns (savitur) is worthy of bowing/respect (varenyam). We all, therefore, should meditate (dheemahi) upon the light (bhargo) of that deity (devasya) and also do chanting of OM. May he (yo) guide in right direction (prachodayat) our (nah) intellect dhiyo.

The important points hinted in the mantra are-

1. The total kinetic energy generated by the movement of galaxies acts as an umbrella and balances the total energy consumption of the cosmos. Hence it was named as the pranavah (body of energy), This is equal to 1/2 mv2 (Mass of galaxies x square of velocity).

2. Realizing the great importance of the syllable OM, the other later date religions adopted this word with a slight change in accent, viz. Amen and Ameen.

OO

आर्य समाज का तीसरा नियम...

ब्रह्मचारी नन्दकिशोर आर्य

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

वेद : वेद शब्द 'विद्' धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है- ज्ञान, सत्ता, लाभ तथा विचार। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखा है 'विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विदन्ते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः। तथाऽऽदिसृष्टिमारभ्याद्य पर्यन्तं ब्रह्मादिभिः सर्वाः सत्यविद्याः श्रूयन्तेऽनया सा 'श्रुतिः' अर्थात् जिनके पढ़ने यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिनको पढ़ के विद्वान् होते हैं, जिनसे सुखों का लाभ होता है, और जिनसे ठीक-ठीक सत्यासत्य का विचार मनुष्य को होता है, इससे ऋक्संहितादि का 'वेद' नाम है। वैसे ही सृष्टि के आरम्भ में युग पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेके हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्यविद्याओं को सुनते आते हैं, इससे वेदों का 'श्रुति' नाम पड़ा है।'

(ईश्वर का (काव्य) वेद अमर है)

अन्ति सन्तं न जहात्यान्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

- अथर्व. 10.8.32।।

वह ईश्वर इतना समीप है कि मनुष्य उसको छोड़ नहीं सकता। वह ईश्वर इतना पास है कि मनुष्य उसे देख नहीं सकता, अतएव हे मनुष्य! तुम उस ईश्वर के काव्य वेद को देखो। वह न कभी मरता है और न ही जीर्ण-शीर्ण होता है। अर्थात् वेद ज्ञान सदा शाश्वत और सनातन है।

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
अतिक्रमन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम।।

- अथर्व. 12.2.28

हे मनुष्यों! वैश्वदेवीम् = सब दिव्य गुणों की जननी इस वेदवाणी को वर्चसे= तेजस्विता की प्राप्ति के लिए आरभध्वम्=प्रारम्भ करो। इस वेदवाणी का अध्ययन तुम्हें सब बुराइयों से बचाकर अच्छाइयों की ओर ले चलेगा। उस समय तुम शुद्धाः भवन्तः=मलों से रहित होते हुए शुचयः=अर्थ के दृष्टिकोण से पवित्र बनोगे और पावकाः= अपने मनों को पूर्ण पवित्र बना पाओगे। तुम्हारी यही कामना हो कि दुरितानि पदानि= सब दुराचरण के मार्गो को अतिक्रामन्तः= उल्लंघन करते हुए सर्ववीराः= सब वीर सन्तानों वाले होते हुए हम शतं हिमाः मदेम= सौ वर्ष तक आनंद का अनुभव करें।

विमर्श : अर्थात् वेद का श्रवण पठन मनुष्य के अंदर पवित्रता पैदा करके दुर्व्यसनों से बचाता है, उससे मनुष्य दीर्घायु पाता है। स्पष्ट ही इसमें वेद के पढ़ने का विधान है तथा उसे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा गया है।

वेदाध्ययन :

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्य दत्ता व्रजत ब्रह्मलोकम्।। - अथर्व. 19.71.1।।

प्रभु आदेश देते हैं- हे मनुष्यों! द्विजों को मनुष्यों को पवित्र करने वाली वेदमाता मैंने उपदेश कर दी। लोगों को उत्तम प्रेरणा दो। (अब) आयु, प्राण, संतान, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज, ज्ञानबल, मुझे देकर ब्रह्मलोक मुक्ति को तुम प्राप्त करो।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना

मिमीहि श्लोक मास्ये पर्जन्य इव ततनः।
गायत गायत्रमुक्थ्यम्।।

- ऋ. 1.38.14।।

हे विद्वान! तू वेदवाणी को मुख में धारण कर और उस वेदवाणी को मेघ की भांति गर्जन करते हुए दूर-दूर तक फैला। उसका उपदेश कर और गायत्री मंत्र में कहे हुए वेद के वचनों को स्वयं गान कर और दूसरों को भी पढ़ा।

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।

- साम. 1298।।

पावमानी अर्थात् सबको पवित्र करने वाली ईश्वर प्रदत्त एवं ऋषियों द्वारा संचित ऋचाओं का जो अध्ययन करता है, वह पवित्र आनंद रस का आस्वादन करता है।

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिमधूदकम्।। - साम. 1299।।

जो पवित्र वेद ऋचाओं को (और) ऋषियों से धारण किये रस को विचारता है। ज्ञानाधार प्रभु उसके लिए दूध, घी, मधु, शहद और जल अथवा मीठी जल देता है।

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम्।।

- साम. 1300।।

सचमुच वेद की पवित्र ऋचाएं कल्याण प्राप्त करने वाली, उत्तमरीति से फल देने वाली, घी और तेज प्राप्त कराने वाली हैं। उनसे ऋषियों ने रस तथा आनंद धारण किया है। और उनसे ही ब्रह्मवेत्ताओं में जीवन अथवा मोक्ष डाला जाता है।

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथा अमुम्।
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृता।।

- साम. 1302।।

वेद की पवित्र ऋचाएं हमारे लिए इस लोक को और उस परलोक को अर्जित करें। निष्काम विद्वानों द्वारा अथवा वेद प्रापक ऋषियों द्वारा भली प्रकार लाई गयी (वे) दिव्य ऋचाएं हमारी कामनाओं को समृद्ध करें, फलीभूत करें।

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः।। -साम. 1302।।

निष्काम ज्ञानी जिस पवित्रता के द्वारा = ज्ञान के द्वारा अपने को

अन्ति सन्तं न जहात्यान्ति सन्तं न पश्यति। देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। - अथर्व. 10.8.32।। वह ईश्वर इतना समीप है कि मनुष्य उसको छोड़ नहीं सकता। वह ईश्वर इतना पास है कि मनुष्य उसे देख नहीं सकता, अतएव हे मनुष्य! तुम उस ईश्वर के काव्य वेद को देखो। वह न कभी मरता है और न ही जीर्ण-शीर्ण होता है। अर्थात् वेद ज्ञान सदा शाश्वत और सनातन है। वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः। अतिक्रमन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम।। - अथर्व. 12.2.28 हे मनुष्यों! वैश्वदेवीम् = सब दिव्य गुणों की जननी इस वेदवाणी को वर्चसे= तेजस्विता की प्राप्ति के लिए आरभध्वम=प्रारम्भ करो। इस वेदवाणी का अध्ययन तुम्हें सब बुराइयों से बचाकर अच्छाइयों की ओर ले चलेगा। उस समय तुम शुद्धाः भवन्तः=मलों से रहित होते हुए शुचयः=अर्थ के दृष्टिकोण से पवित्र बनोगे और पावकाः= अपने मनों को पूर्ण पवित्र बना पाओगे। तुम्हारी यही कामना हो कि दुरितानि पदानि= सब दुराचरण के मार्गों को अतिक्रामन्तः= उल्लंघन करते हुए सर्ववीराः= सब वीर सन्तानों वाले होते हुए हम शतं हिमाः मदेम= सौ वर्ष तक आनंद का अनुभव करें। अर्थात् वेद का श्रवण पठन मनुष्य के अंदर पवित्रता पैदा करके दुर्व्यसनों से बचाता है, उससे मनुष्य दीर्घायु पाता है। स्पष्ट ही इसमें वेद के पढ़ने का विधान है तथा उसे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा गया है। वेदाध्ययन - स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम। मह्य दत्ता व्रजत ब्रह्मलोकम।। - अथर्व. 19.71.1।। प्रभु आदेश देते हैं- हे मनुष्यों! द्विजों को मनुष्यों को पवित्र करने वाली वेदमाता मैंने उपदेश कर दी। लोगों को उत्तम प्रेरणा दो। (अब) आयु, प्राण, संतान, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज, ज्ञानबल, मुझे देकर ब्रह्मलोक मुक्ति को तुम प्राप्त करो। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना मिमीहि श्लोक मास्ये पर्जन्य इव ततनः। गाय गायत्रमुक्थ्यम।। - ऋ 1.38.14।। हे विद्वान! तू वेदवाणी को मुख में धारण कर और उस वेदवाणी को मेघ की भांति गर्जन करते हुए दूर-दूर तक फैला। उसका उपदेश कर और गायत्री मंत्र में कहे हुए वेद के वचनों को स्वयं गान कर और दूसरों को भी पढ़ा।

आत्मा को, पवित्र करते हैं उस हजारों धाराओं वाले ज्ञानके द्वारा वेद की पवित्र ऋचाएं हमें पवित्र करें।

पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्।
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छाति।।

- साम. 1303।।

ये पावमानी ऋचाएं कल्याणकारिणी हैं, इनके द्वारा मनुष्य आनंद को प्राप्त होते हैं, इन ऋचाओं को अर्थात् वेद का स्वाध्याय करने वाला इस लोक में उत्तम भोग का उपयोग करता हुआ मोझ का अधिकारी बन जाता है। अतएव स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

वेदानुसार आचरण

नकिर्देवा मिनीमसि कि योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे।।

- ऋ. 10-134.7।।

हे दिव्य गुण सम्पन्न विद्वान महात्माओ! न तो हम हिंसा करते हैं और नहीं हम फूट डालते हैं, वेदमंत्र के ज्ञानानुसार हम आचरण करते हैं इस संसार में तिनके के समान तुच्छ साथियों के साथ भी मिलकर एक होकर सम्मुख उद्योग करते हैं।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधसि।।

- अथर्व. 1.1.4।।

हम सुने हुए वेद ज्ञान के अनुसार आचरण करें। हम सुने हुए वेदज्ञान के विरुद्ध आचरण न करें।

इस प्रकार वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म कर्त्तव्य बताकर ऋषि दयानन्द सरस्वती न वेद को चरितार्थ किया है।

सुश्रुतौ कर्णौ भद्रभुतौ कर्णौ भद्रं श्लोक श्रूयासम्।।

- अथर्व. 16.2.4।।

मेरे कान उत्तम उपदेश श्रवण करने वाले हैं। मेरे कर्णौ= कान भद्रश्रुतौ= कल्याण की बात सुनने वाले हैं। इसलिए मैं कल्याणमय यश के विषय में उपदेश श्रूयासम्= सुनूं।

विमर्श : कानों से ऐसा उपदेश श्रवण करना चाहिए कि जिससे अपना सदैव कल्याण हो, अपना यश बढ़े।

OO

हमारा शरीर नश्वर है। और ये नश्वर शरीर हमें इसलिए मिला है कि हम ये साबित कर सके कि 'मनुष्यता' और 'आत्मविवेक' क्या होती है।

दुनिया में सबसे बढ़िया संगीत का साधन इंसान की आवाज होती है।

वेदों-पुराणों में जो कुछ बताया गया। उसका पान करने के बाद हम ये जान सके कि जिन्दगी का मकसद-उद्देश्य क्या है।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

वेदारम्भसंस्कारे पितृ-उपदेशः

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य

दश दश प्रंच समाः गुरुगेहे, बहु वा वस बलमानय देहे।
मानसमर्जय चापि बलं शुचि, तात! सुपथ्यतमन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

वेदमथाङ्गयुतं परिशीलय, गुरुतन्त्रो गुणगणमुन्मीलय।
आचर घोषय चार्षवचोऽथ च, धारय भक्तिमनन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

रेतस ऊर्ध्वगतिं सम्पादय, मानसजं पशुमारं मारय।
प्राणनायच्छापि यतः स्यात् सर्वेन्द्रियदमनन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

चंचलतामपहाय धृतिं भज, सूनृतमाश्रयतामनृतं त्यज।
भावय हार्दरसांचितवचनं, सन्मधुना सदृशन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

भव मितभाषी धीरः शीलो, युक्ताहारविहारसुशीलः।
विद्यामाराधय तपसाऽर, संब्रज दूरदिगन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

जागृहि प्रातः शौचमथाचर, सन्ध्यानं कुरु समिथंचाहर।
देवेष्टिं यज गुरुमेव भज, नित्यं कृत्यमिदन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

नाभ्यङ्गदिकमण्डनरक्तो, नो भव सायक इव संसक्तः।
अपत्यम्लाधिकतिक्तविरेचन-वस्तुसमाहरणन्ते॥
वर्णिन् व्रतमेव धनन्ते॥

वेदारम्भ संस्कार के अवसर पर पिता पुत्र को आचार्य को समर्पित करता हुआ उपदेश देता है-

हे ब्रह्मचारी! ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना ही तेरा मुख्य ध्येय है। प्रतिदिन शुद्ध जल से आचमन किया कर अन्य शुभ कर्म किया कर। लोभ करना, दिन में सोना, आंखों में अंचन, सुगंधित तेल अधिक स्वच्छता कृतिमता को त्याग दे। गुरु के हेतु जल जाना तेरा प्रतिदिन का कर्त्तव्य है॥ १॥

परनिंदा, मोह, भयादि को छोड़ दे, रात्रि में अधिक जागरण एवं अधिक भोजन कभी न किया कर। आवश्यकतानुसार वस्तु संग्रह किया कर। घोड़ा, हाथी की सवारी तथा देर तक सोना तेरे मान्य कर्म नहीं है॥ २॥

गुरुकुल में २५ वर्ष तक या अधिक वर्षों तक निवास कर, शरीर में शक्ति संचय कर। मन को एकाग्र करना, बल संचय तथा सभी प्रकार की पवित्रता रखना हे पुत्र। तेरे सेवनीय कर्म हैं॥ ३॥

वेदवेदाङ्गों के सभी ग्रंथों का स्वाध्याय कर, वैदिक सिद्धांतों का विकास कर, आर्ष वचनों का ही उच्चारण कर तथा उन्हीं का आचरण कर एवं अनन्त परमेश्वर में भक्ति को धारण कर॥ ४॥

वीर्य की ऊर्ध्वगति करके मन के अंदर उत्पन्न होने वाले दुष्ट भावों को पशुमार से नाश करदे एवं प्राणों को भी लम्बा कर जिससे तेरा इंद्रिय दमन भलीभांति हो सके॥ ५॥

अधिक चंचलता को त्याग कर गंभीरता को धारण कर, सत्य का आश्रय ले, असत्य भाषण को त्याग दे, अपने हृदय को शुद्ध पवित्र भावों से परिपूर्ण कर ले तथा तेरा एक एक वचन मधु के समान सुमधुर हृदयग्राही हो॥ ६॥

ज्ञान की खोज

फाल्गुन कृष्ण संवत् 1895 में शिवरात्रि के दिन उनके जीवन में नया मोड़ आया। उन्हें नया बोध हुआ। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए वह गुरु विरजानन्दके पास पहुंचे। गुरुवर ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पातंजल-योगसूत्र तथा वेद-वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा- विद्या को सफल कर दिखाओ, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओ, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करो, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि ईश्वर उनके पुरुषार्थ को सफल करे। उन्होंने अंतिम शिक्षा दी -मनुष्यकृत ग्रंथों में ईश्वर और ऋषियों की निंदा है, ऋषिकृत ग्रंथों में नहीं। वेद प्रमाण हैं। इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना। वर्तमान में केवल पांडुरंग शास्त्री उनमें से एक है जो आर्य समाज की तरह काम कर रही है।

स्वामी श्रद्धानन्द

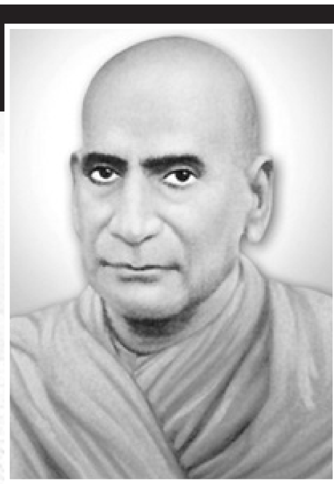

ऋषि दयानन्द के अनुयायी
तुम मूर्तिमान् दम, यम, संयम
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें
युग युग तक याद करेंगे हम॥

तेजस्वी वीर मनस्वी थे
व्यक्तित्व प्रभावी अनुपम था
मन में एक दर्द दासता का
दीनों से स्नेह अपरिमित था॥

है याद चांदनी चौक, कि जब
जन-जन था तेरी जय बोला
मुख मोड़ गयीं थी संगीनें
जब साहस से सीना खोला॥

जब तक यह अमर तिरंगा है, यह
भारतभूमि पावन तम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें...

तुम ज्ञान योग के उपदेशक
तुम कर्म योग के वीर व्रती
तेरी दृढ़ता की समता में
नत मस्तक यह अम्बर धरती॥

रखते थे प्राण हथेली पर
तुम स्वतंत्रता के सेनानी
चल पड़े कोटि पग उसी ओर
तुम जिधर चल पड़े बलिदानी॥

जब तक यह अटल हिमालय है, यह
गंगा, यमुना का संगम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें...

था किया राष्ट्रहित में, तुमने
गुरुकुल शिक्षा का संचालन
इस आर्यावर्त में आर्य बनें सब
यह था शुद्धि- आंदोलन॥

मानवता के सच्चे सेवक
बंधुत्वभाव के पोषक थे
तुम ज्ञान धनी तुम मानधनी
अध अन्यायों के शोषक थे॥

जब तक नस-नस में गर्म लहू, जब
तक यह सांसों की सरगम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें...

जब देश धर्म पर जड़ता
और अविद्या के घन छाये थे
तुम सत्यम् शिवम् सुंदरम् के
शुभ सूरज बनकर आये थे॥

यह स्वतंत्रता वरदान तुम्हारा
गुरुकुल तेरी धाती है
चिरऋणी तुम्हारा आर्य जगत
चिरऋणी देश की माटी है॥

जब तक ये सूरज चांद और जब तक
यह शाश्वत सृष्टि क्रम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें...

तुम दुःख सुख में थे एक रूप
फूलों शूलों से स्नेह रहा
'विश्वम् कृण्वन्तो आर्यम् ही
तब जीवन का उद्देश्य रहा॥

तुम वेद धर्म के लिए जिये
मिट गये कर्म की वेदी पर
मर कर सब कुछ पाया तुमने
कोई पा न सकेगा, जो जीकर॥

जब तक मानवता जीवित है, जीवित
सद्भावों के उद्गम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें...
तब किया विश्व कल्याण हेतु

व्रत लिया अविद्या नाश हेतु
अभिशाप सभी वरदान बने
जब गृह त्यागा सन्यास हेतु॥

गर्जन से कांपे दिग्दिगन्त
ऐसा वक्ता ओजस्वी थे
मन से वशिष्ठ, तन से दधीचि
तुम विश्वामित्र मनस्वी थे॥

जब तक सागर की मर्यादा, जब तक
सृष्टा के अटल नियम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें, युग-युग तक
याद करेंगे हम॥

कांटों के बीच गुलाब खिले
कीचड़ में कमल खिले जैसे
संकट विरोध के बादल से
तुम निकले थे चन्दा जैसे॥

हारी बाजी को पलट सके
थे चतुर खिलाड़ी चाव भरे
तूफानों में नैया खेले
ऐसे मांझी उत्साह भरे॥

जब तक ये आर्य समाज है, तब तक हैं
इनके दसों नियम।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द तुम्हें युग-युग तक
याद करेंगे हम॥

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा का जीवन परिचय

श्यामजी कृष्ण वर्मा एक भारतीय क्रांतिकारी, वकील और पत्रकार थे। वो भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। इंग्लैंड से पढ़ाई कर उन्होंने भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वो भारत से इंग्लैण्ड चले गये।

वह संस्कृत समेत कई और भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। उनके संस्कृत के भाषण से प्रभावित होकर मोनियर विलियम्स ने वर्माजी को ऑक्सफोर्ड में अपना सहायक बनने के लिए निमंत्रण दिया था। उन्होंने 'इंडियन होम रूल सोसाइटी', 'इंडिया हाउस' और 'द इंडियन सोसिओलोजिस्ट' की स्थापना लन्दन में की थी। इन संस्थाओं का उद्देश्य था वहां रह रहे भारतीयों को देश की आजादी के बारे में अवगत कराना और छात्रों के मध्य परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श। श्यामजी ऐसे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-एट-ला की उपाधियां मिलीं थीं।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के माण्डवी कस्बे में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीकृष्ण वर्मा और माता का नाम गोमती बाई था। जब बालक श्यामजी मात्र 11 साल के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया जिसके बाद उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। प्रारंभिक शिक्षा भुज में ग्रहण करने के बाद उन्होंने अपना दाखिला मुंबई के विल्सन हाई स्कूल में करा लिया। मुंबई में रहकर उन्होंने संस्कृत की शिक्षा भी ली। सन् 1875 में उनका विवाह भानुमती से करा दिया गया। भानुमती श्यामजी के दोस्त की बहन और भाटिया समुदाय के एक धनी व्यवसायी की पुत्री थीं। इसके पश्चात उनकी मुलाकात स्वामी दयानन्द सरस्वती से हुई, जो एक समाज सुधारक, वेदों के ज्ञाता और आर्य समाज के संस्थापक थे। श्यामजी शीघ्र ही उनके शिष्य बन गए और वैदिक दर्शन और धर्म पर भाषण देने लगे। सन् 1877 के दौरान उन्होंने घूम-घूम कर देश में कई जगहों पर भाषण दिया जिसके स्वरूप उनकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। मोनिएर विलिअम्स (जो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर थे) श्यामजी के संस्कृत ज्ञान से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें ऑक्सफोर्ड में अपने सहायक के तौर पर कार्य करने का न्यौता दे दिया।

श्यामजी इंग्लैंड पहुंच गए और मोनिएर विलिअम्स की अनुशंसा पर उन्हें ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बल्लिओल कॉलेज में 25 अप्रैल 1879 को दाखिला मिल गया। उन्होंने बी.ए. की परीक्षा सन् 1883 में पास कर ली और 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' में एक भाषण प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था 'भारत में लेखन का उदय'। उनके भाषण को सराहना मिली और उन्हें रॉयल सोसाइटी की अनिवासी सदस्यता मिल गयी।

स्वामी दयानंद सरस्वती का साहित्य पढ़ने के बाद श्यामजी कृष्ण वर्मा उनके राष्ट्रवाद और दर्शन से प्रभावित होकर पहले ही उनके अनुयायी बन चुके थे। स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रेरणा से ही उन्होंने लन्दन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की थी जिससे मैडम कामा, वीर सावरकर, वीरेन्द्रनाथ चटोपाध्याय, एस.आर. राना, लाला हरदयाल, मदन लाल ढींगरा और भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारी जुड़े थे। श्यामजी लोकमान्य गंगाधर तिलक के भी बहुत बड़े प्रशंसक और समर्थक थे। उन्हें कांग्रेस पार्टी की अंग्रेजों के प्रति नीति अशोभनीय और शर्मनाक प्रतीत होती थी। उन्होंने चापेकर बंधुओं के हाथ पूना के प्लेग कमिश्नर की हत्या का भी समर्थन किया और भारत की स्वाधीनता की लड़ाई को जारी रखने के लिए इंग्लैंड रवाना हो गये।

उनका मानना था कि असहयोग के द्वारा

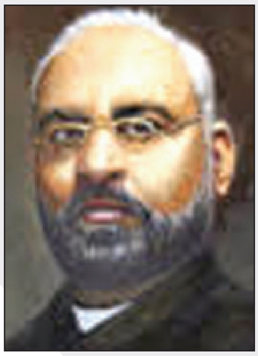

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के माण्डवी कस्बे में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीकृष्ण वर्मा और माता का नाम गोमती बाई था। जब बालक श्यामजी मात्र 11 साल के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया जिसके बाद उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। प्रारंभिक शिक्षा भुज में ग्रहण करने के बाद उन्होंने अपना दाखिला मुंबई के विल्सन हाई स्कूल में करा लिया। मुंबई में रहकर उन्होंने संस्कृत की शिक्षा भी ली। सन् 1875 में उनका विवाह भानुमती से करा दिया गया। भानुमती श्यामजी के दोस्त की बहन और भाटिया समुदाय के एक धनी व्यवसायी की पुत्री थीं। इसके पश्चात उनकी मुलाकात स्वामी दयानन्द सरस्वती से हुई, जो एक समाज सुधारक, वेदों के ज्ञाता और आर्य समाज के संस्थापक थे। श्यामजी शीघ्र ही उनके शिष्य बन गए और वैदिक दर्शन और धर्म पर भाषण देने लगे।

अंग्रेजों से स्वतंत्रता पायी जा सकती है। वो कहते थे कि यदि भारतीय अंग्रेजों कोसहयोग देना बंद कर दें तो अंग्रेजी शासन बहुत जल्द धराशायी हो सकता है।

इंग्लैण्ड पहुंचने के बाद उन्होंने सन् 1900 में लन्दन के हाईगेट क्षेत्र में एक आलिशान घर खरीदा जो राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बना। स्वाधीनता आन्दोलन के प्रयासों को सबल बनाने के लिए उन्होंने जनवरी 1905 से 'इन्डियन सोशियोलोजिस्ट' नामक मासिक पत्र निकालना प्रारंभ किया और 18 फरवरी, 1905 को 'इन्डियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना की।

इस सोसाइटी का उद्देश्य था 'भारतीयों के लिए भारतीयों के द्वारा भारतीयों की सरकार स्थापित करना'। इस घोषणा के क्रियान्वन के लिए उन्होंने लन्दन में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की, जो भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान इंग्लैण्ड में भारतीय राजनीतिक गतिविधियों का सबसे बड़ा केंद्र रहा। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, गोपाल कृष्ण गोखले, गांधी और लेनिन जैसे नेता इंग्लैंड प्रवास के दौरान 'इंडिया हाउस' जाते रहते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा के राष्ट्रवादी लेखों और सक्रियता ने ब्रिटिश सरकार को चौकन्ना कर दिया। उन्हें 'इनर टेम्पल' से निषेध कर दिया गया और उनकी सदस्यता भी 30 अप्रैल 1909 को समाप्त कर दी गयी। ब्रिटिश प्रेस भी उनके खिलाफ हो गयी थी और उनके खिलाफ तरह-तरह के इल्जाम लगाए गए पर उन्होंने हर बात का जबाब बहादुरी से दिया। ब्रिटिश खुफिया तंत्र उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए था इसलिए उन्होंने 'पेरिस' को अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाना उचित समझा और वीर सावरकर को 'इंडिया हाउस' की जिम्मेदारी सौंप कर गुप्त रूप से पेरिस निकल गए।

पेरिस पहुंचकर उन्होंने अपनी गतिविधियां फिर शुरू कर दी जिसके स्वरूप ब्रिटिश सरकार ने फ्रांसिसी सरकार पर उनके प्रत्यर्पण का दबाव डाला पर असफल रही। पेरिस में रहकर श्यामजी कई फ्रांसिसी नेताओं को अपने विचार समझाने में सफल रहे। सन् 1914 में वो जिनेवा चले गए जहां से अपनी गतिविधियों का संचालन किया। सन् 1920 के दशक में श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वास्थ्य प्रायः खराब ही रहा। उन्होंने जिनेवा में भी 'इंडियन सोसिओलोजिस्ट' का प्रकाशन जारी रखा पर खराब स्वास्थ्य के कारण सितम्बर 1922 के बाद कोई अंक प्रकाशित नहीं कर पाए।

उनका निधन जिनेवा के एक अस्पताल में 30 मार्च 1930 को हो गया। ब्रिटिश सरकार ने उनकी मौत की खबर को भारत में दबाने की कोशिश की।

आजादी के लगभग 55 साल बाद 22 अगस्त 2003 को श्यामजी और उनकी पत्नी की अस्थियों को जिनेवा से भारत लाया गया और फिर उनके जन्म स्थान मांडवी ले जाया गया। उनके सम्मान में सन 2010 में मांडवी के पास 'क्रांति तीर्थ' नाम से एक स्मारक बनाया गया। भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया और कच्छ विस्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर रख दिया गया।

(31 मई को जिनकी पुण्यतिथि है)
इनके द्वारा देश हित में किये गये कार्यों के लिए देश इनका सदैव ऋणी रहेगा
।। वीर शहीद श्याम जी को शत् शत् नमन।।

वेद मंत्र की व्याख्या

विद्यानंद 'विदेह'

अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृतत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्। ऋग्वेद

मेरी अज्ञान-रात्रि समाप्त हुई। ज्ञानोदय हुआ। अब सर्वत्र तू दिखाई दे रहा है। जिधर दृष्टि डालता हूं उधर ही तू प्रकाश दे रहा है। हर दृश्य में तू दृश्यमान है। हर दिशा में तू सम्मुख उपस्थित है।

मुझे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है कि इस विश्वयज्ञ का प्रकाशक तू ही है। समस्त सृष्टि का उपास्य देव तू ही है। सकल समष्टि तेरी ही स्तुति कर रही है।

ऋत्विक भी तू ही है। तेरी ही विश्वव्यापिनी व्यवस्था से नाना ऋतुएं और प्रत्येक ऋतु में जीवन सुविधा की सब वस्तुएं उत्पन्न होती रहती हैं।

दाता भी तू अद्वितीय है और हैं अनन्त तेरे दान। तेरे दानों का पारावार नहीं। तू भौतिक और आत्मिक, असंख्य रत्नों का धारक है। जो तेरी न्यायव्यवस्था में नतमस्तक है, जो तेरे अखंड और अटूट नियमों को पहचान कर पुरुषार्थ करते हैं वे दोनों लोकों के ऐश्वर्यों से निहाल हो जाते हैं, वे भौतिक और आत्मिक विभूतियों से भरपूर रहते हैं।

देव! तेरी महिमा अपार है। तेरी कृपाओं और तेरे उपकारों का वर्णन करते हुए मैं अवाक हो जाता हूं। बस, मैंने तो यही व्रत किया हुआ है स्तवन करना तो तेरा ही करना, चिंतन करना तो तेरा ही करना और गीत गाने तो तेरे ही गाने।

अपने अतीत को कभी मत भूलो क्योंकि हमारा अतीत ही हमें गलतियों से बचाता है
हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कान वा खुशी रखो दूसरों को भी खुशी दो तुम्हें खुद खुशी मिलेगी
- बाबा रामदेव

भगवतः श्रीकृष्णस्य विश्वरूपदर्शनम्

निरंजनलाल मंगलः

प्रक्कथनम् वाल्मीकीये रामायणे श्रीराममीश्वरस्य देववरस्य विष्णोश्चावतारं प्रदर्शयितुं बहुप्रक्षेतो वर्त्तते। तथैव श्रीकृष्णमीश्वरस्य विष्णोश्चावतारं घोषयितुं बहुप्रक्षेपः कृतोऽस्ति। अतो गीतोपनिषदि कृष्णस्य विश्वरूपदर्शनस्य श्लोकस्य सन्निधौ ये श्लोकाः सन्ति, तेषां प्रमाणविषये न वक्तुं शक्यते। पुनरपि विश्वरूपदर्शनं सम्भाव्यते, वेदशास्त्रैः सङ्गच्छते।

स्वामिदयानन्दमहोदयेनोक्तम्- 'सत्यस्य ग्रहणे चासत्यस्य त्यागे सदोद्यतो भवेत्।' तस्यैव स्वीकृतार्षग्रन्थैरत्र निगद्यते। स्वामिसमर्पणानन्दमहाभागं, यस्य रमणीये प्रभाताश्रमे स्वामिविवेकान्दमहाभागान् महाभाष्यमध्यैषि, नमस्कुर्वन्-ओ३म् ब्रह्मणे नमः।

अर्जनस्य वीरस्य भगवता कृष्णेन विश्वरूपदर्शनं सम्भाव्यते। कथम्? श्रूयताम् अनसूयया। (सूक्ष्म विषयः)

1. सर्वप्रथममेतदवगन्तव्यं यदात्मा विभुः (सर्वव्यापकः)। वैशेषिके **'विभवान्महानाकाशस्तथा चात्मा'**- वैशेषिकम्- (७/२/२२)

अत्र केचन विद्वांसः आत्मानम् अणुं मन्यन्ते। उपर्युक्तसूत्रस्य च विच्छेदं कुर्वन्ति। तन्न समीचीनम्। यतो हि प्रशस्तपादभाष्ये आत्मद्रव्यनिरूपणे-

'तथा चेतिवचनात् परममहत्परिणाम्।' (अर्थात्- विभुत्वम्)

'व्यवस्थावचनात् संख्या' (अर्थात्- अनेकत्वम्) प्रशस्तपाद, आत्मद्रव्यम् अत्र भगवतो धन्वन्तरेरपि प्रमाणम्-

'अत ऊर्ध्व प्रकृतिपुरुषयोः साधर्म्यवैधर्म्ये व्याख्यास्यामः। यद्यथा उभौ च सर्वगताविति... बहवस्तु पुरुषाशचेतनावन्तः'। सुश्रुत... शरीर- १/१

वेदस्यापि प्रमाणम्- 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य ब्राह्यतः।' शक्लयजुर्वेदः माध्यन्दिनीयशाखा-४०/५

एवम् आत्मा सर्वव्यापकः। अनेके चात्मानः। पुनरपि विभुत्वस्य ज्ञानं समाधौ भवति। सामान्यजनानां व्यवहाराय पुरुषोऽणुत्वेन व्यवह्रियते।

यथा सुश्रुते- 'आयुर्वेदशास्त्रेषु- असर्वगताः क्षेत्रज्ञा नित्याश्च तिर्यग्योनिमानुषदेवेषु संचरन्ति धर्माधर्मनिमित्तम्।' सुश्रुत - शारीर १/१६

एतत् सुक्ष्मशरीरमधिकृत्य भवति। यतो हि सूक्ष्मशरीरमणु। पुनस्तु परमात्मात्मयोः को भेदः? योगदर्शनमत्र द्रष्टव्यम्।

'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।' योगदर्शनम्- १/२४

2. ज्ञानमात्मनो गुणः!

पुनस्तु सर्वगतस्यात्मनोऽनन्तानि ज्ञानानि युगपद् भवेतुः? भद्रं भवतु। अनादिकालतो बद्धानां जीवानां मलावरणं वर्त्तते। मनसा संयोगाद् एकस्मिन् क्षणे एकमेव ज्ञानं भवति। द्रष्टव्यं वैशेषिकम्

'आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षज्ञानस्य भावोऽभावश्च मनसो लिंगम्'; 'प्रयत्नायौगपद्याज्ज्ञानायौगपद्याच्चैकम्।' वै. ३/२/१,३

3. योगिनः समाधौ युगपद अनेकानि ज्ञानानि सम्भाव्यन्ते। द्रष्टव्यं योगदर्शनम्

'सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च।' 'सर्वज्ञातृत्वं सर्वात्मनां गुणानां शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मत्वेन व्यवस्थितानाम् अक्रमोपारुढं विवेकजं ज्ञानमित्यर्थः।' योग.- ३/४९ व्यासभाष्यम् ३/४९

पुनरपि- 'तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम्।' (विश्वरूपदर्शनम्)

'अक्रममित्येकक्षणोपारुढं सर्वं सर्वथा गृहातीत्यर्थः।' योगदर्शनम्- ३/५४, व्यास. ३/५४

वेदेऽपि- 'यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।' यजुर्वेदः, माध्यन्दिनीय- ४०/६

4. श्रीकृष्णो योगिराज इति प्रसिद्धम्। अथ च योगी द्वितीयं जीवं समाधिस्थं कर्त्तुमर्हति स्वसंङल्पेन। द्रष्टव्यं योगदर्शनम्

'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्।'

'धार्मिको भूया इति भवति धार्मिकः। स्वर्ग प्राप्नुहीति स्वर्गं प्राप्नोति। अमोघाऽस्य वाग् भवति।' योगदर्शनम् २/३६, व्यास २/३६

5. अतो योगी श्रीकृष्णोऽर्जुनस्य विश्वरूपदर्शनं कारयितु शक्नोति। भगवतो व्यासस्य मूलश्लोका अन्वेषणीयाः।

1. **वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।**
   संस्कृत अर्थात् संस्कारयुक्त वाणी ही मानव को सुशोभित करती है।
2. **वस्त्रेण किं स्यादिति नैव वाच्यम् । वस्त्रं सभायामुपकारहेतुः?**
   अच्छे या बुरे वस्त्र से क्या फर्क पडता है ऐसा न बोलो, क्योंकि सभा में तो वस्त्र बहुत उपयोगी बनता है!
3. **क्लिश्यन्ते लोभमोहिताः ।**
   लोभ की वजह से मोहित हुए हैं वे दुःखी होते हैं ।
4. **रूपेण किं गुणपराक्रमवर्जितेन ।**
   जिस रूप में गुण या पराक्रम न हो उस रूप का क्या उपयोग?

वीर सावरकर जयंती
28 मई

वे कुशाग्र बुद्धि वाले थे। 15 वर्ष में स्वाधीनता के प्रति युवकों को संगठित किया और 'मित्र मेला' संस्था का गठन किया। फिर इसे अभिनव भारत किया जिसने भारत ही नहीं विदेशों में भी क्रांति की अग्नी प्रज्जवलित की। 1857 में सर्वतंत्रय समर नामक पुस्तक लिखी व स्वतन्त्रता संग्राम की परिभाषा दी। भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चंद्रशेखर ने इसको गीता कहा।

1905 में इंग्लैण्ड में श्यामजी कृष्ण वर्मा से सम्पर्क हुआ। वह सक्रिय हो गये व क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। खुफिया विभाग ने रिपोर्ट दी कि दो अंग्रेजों की हत्या के पीछे सावरकर की प्रेरणा रही है। इसी दोष में 1912 में एक नहीं दो, दो आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

न्यायाधीश ने जब उनसे पूछा क्या आप समझते हो कि दो आजीवन कारावास की सजा सुन करके तुम जेल से वापस लौट सकोगे! वीर सावरकर ने निर्भीकता के साथ उत्तर दिया 'मैं लौट पाऊंगा या न लौट पाऊंगा मगर इतना निश्चित है कि ब्रिटिश साम्राज्य भारत में नहीं रहेगा।' उन्हें मालूम था भारत में उन्हें मृत्युपरांत जेल में रहना पड़ेगा इसीलिए स्थिति से बचने के लिए साहस का परिचय देते हुए-फ्रांस की बंदरगाह में जहाज से कूदकर तैरते-तैरते किनारे पर पहुंचकर फ्रांसीसियों को समर्पण किया। उन्होंने पुनः अंग्रेजों को सौप दिया।

सावरकर जी को अंडमान की जेल में अनेकों यातनाएं दी गई जिसके स्मरण से हृदय हिल उठता है। कोल्हु में बैल के स्थान पर जोता जाता था पर भारत के सपूत के साहस में कोई कमी नहीं आयी। जेल में भी लेखन कार्य व समाज सेवा में लगे रहते थे। वे भविष्य दृष्टा थे यही कारण था कि गांधी जो की मुश्लिम तुष्टिकरण का वे सदा विरोध करते रहे।

उन्होंने महर्षि द्वारा समाज सुधार की दिशा में किए गए कार्य को आगे बढ़ाया, स्त्री शिक्षा पर बल दिया, अंधविश्वास, छुआछूत को अभिशाप माना उन्होंने जात-पात को भी अभिशाप माना। वे भारत को एक अत्यधिक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। 26 फरवरी 1966 को इस वीर पुरुष ने अंतिम सांस ली।

(जिनका जन्म 28 मई को है)

राष्ट्र के प्रति उस महामानव ने माहनतम कार्य किया जिसे आने वाली पीढ़ियां याद रखेंगी।

।। शहीद वीर सावरकर को शत-शत नमन।।

आर्ष गुरुकुल का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में दिनांक 7-5-2017 रविवार को वर्ष 2017-18 के लिए हुए चुनाव में सर्व सम्मति से अधिकारी निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी श्री आर.एल. लवानिया जी की देखरेख में चुनाव सम्पन्न किए गए।

श्री रविन्द्र सेठ- प्रधान, श्री विजेन्द्र कठपालिया- उप प्रधान, श्रीमती लक्ष्मी सिन्हा- उप प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल- उप प्रधान, आर्य. कै. अशोक गुलाटी- महामंत्री, श्री नरेन्द्र सूद- कोषाध्यक्ष।

महिला समाज

श्रीमती गायत्री मीना- प्रधाना, श्रीमती ओमवती गुप्ता- उप प्रधाना, श्रीमती आदर्श बिश्वनोई- मंत्रीणी, श्रीमती संतोष लाल- कोषाध्यक्ष।

आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं.)

श्री रविन्द्र सेठ- प्रधान, श्री विजेन्द्र कठपालिया- उप प्रधान, श्रीमती लक्ष्मी सिन्हा- उप प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल- उप प्रधान, आर्य. कै. अशोक गुलाटी- महामंत्री, श्री नरेन्द्र सूद- कोषाध्यक्ष, श्रीमती गायत्री मीना- सदस्य।

- संपादक

भूल सुधार

अप्रैल 2017 अंक पृष्ठ तीन पर 'दया-क्षमा' में सर्वथा सब जीवों पर दया करना भी सुख के स्थान पर दुःख त्रुटिपूर्ण मुद्रित हो गया है जिसके लिए संपादक क्षमा प्रार्थी हैं।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के जन्म दिवस पर शत-शत नमन

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी (26 अप्रैल 1864-1890), महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। 26 वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहान्त हो गया किन्तु उतने ही समय में उन्होने अपनी विद्वता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में झंग में अध्यापक थे।

विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में बिल्कुल अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इण्डिया' तथा 'ग्रीस इन इण्डिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतशः ग्रन्थ पढ़ लिये।

वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. (विज्ञान, नेचुरल साइंस) में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। वह 'द रिजेनरेटर ऑफ आर्यावर्त' के वे सम्पादक रहे। 1884 में उन्होंने 'आर्यसमाज साइंस इन्स्टीट्यूशन' की स्थापना की। अपने स्वतन्त्र चिन्तन के कारण इनके अन्तर्मन में नास्तिकता का भाव जागृत हो गया। दीपावली (1883) के दिन, महाप्रयाण का आलिंगन करते हुए महर्षि दयानन्द के अन्तिम दर्शन ने गुरुदत्त की विचारधरा को पूर्णतः बदल दिया। अब वे पूर्ण आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति एवं

विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कट लगन के कारण वे अपने साथियों में बिल्कुल अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इण्डिया' तथा 'ग्रीस इन इण्डिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतशः ग्रन्थ पढ़ लिये।

परम्परा के प्रबल समर्थक एवं उन्नायक बन गए। वे डीएवी के मंत्रदाता एवं सूत्रधार थे। पूरे भारत में साइंस के सीनियर प्रोफेसर नियुक्त होने वाले वह प्रथम भारतीय थे। वे गम्भीर वक्ता थे, जिन्हें सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती थी। उन्होंने कई गम्भीर ग्रन्थ लिखे, उपनिषदों का अनुवाद किया। उनका सारा कार्य अंग्रेजी में था। उनकी पुस्तक 'द टर्मिनॉलॉजि ऑफ वेदास' को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत किया गया।

उनके जीवन में उच्च आचरण, आध्यात्मिकता, विद्वत्ता व ईश्वरभक्ति का अद्भुत समन्वय था। उन्हें वेद और संस्कृत से इतना प्यार था कि वे प्रायः कहते थे कि- 'कितना अच्छा हो यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा केवल विशुद्ध संस्कृतज्ञ बन सकूं।' 'वैदिक मैगजीन' के नाम से निकाले उनके रिसर्च जर्नल की ख्याति देश-विदेश में फैल गई। यदि वे दस वर्ष भी और जीवित रहते तो भारतीय संस्कृति का बौद्धिक साम्राज्य खड़ा कर देते। पर, विधि के विधान स्वरूप उन्होंने 19 मार्च 1890 को चिरयात्रा की तरफ प्रस्थान कर लिया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने 2000 ई. में उनके सम्मान में अपने रसायन विभाग के भवन का नाम 'पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हाल' रखा है।

आर्य समाज को उन पर नाज है!

‘विश्ववारा संस्कृति’ के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि ‘विश्ववारा संस्कृति’ दिनांक 15 तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रधान संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही ‘विश्ववारा संस्कृति’ पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।

3. लेख संपादक ‘विश्ववारा संस्कृति’ के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. ‘विश्ववारा संस्कृति’ में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।

5. यह ‘विश्ववारा संस्कृति’ पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. ‘विश्ववारा संस्कृति’ के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क ‘विश्ववारा संस्कृति’ भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय ‘विश्ववारा संस्कृति’ में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख ‘विश्ववारा संस्कृति’ में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक
‘विश्ववारा संस्कृति’
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 9555779571
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

स्वामी दयानन्द के योगदान के बारे में महापुरुषों के विचार

डॉ. भगवान दास ने कहा था कि स्वामी दयानन्द हिन्दू पुनर्जागरण के मुख्य निर्माता थे। श्रीमती एनी बेसेन्ट का कहना था कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने ‘आर्यावर्त (भारत) आर्यावर्तियों (भारतीयों) के लिए’ की घोषणा की। सरदार पटेल के अनुसार भारत की स्वतन्त्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने डाली थी। पट्टाभि सीतारमैया का विचार था कि गांधी जी राष्ट्रपिता हैं, पर स्वामी दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। फ्रेंच लेखक रोमां रोलां के अनुसार स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति को क्रियात्मक रूप देने में प्रयत्नशील थे। अन्य फ्रेंच लेखक रिचर्ड का कहना था कि ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श है- आर्यावर्त! उठ, जाग, आगे बढ़। समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर। स्वामी जी को लोकमान्य तिलक ने ‘स्वराज्य का प्रथम सन्देशवाहक’ कहा। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ‘आधुनिक भारत का निर्माता’ माना। अमरीका की मदाम ब्लेवेट्स्की ने ‘आदि शंकराचार्य के बाद’ बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक’ माना।

विश्ववारा संस्कृति

- सभी धार्मिक सामाजिक पत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रकाशित होने वाली पत्रिका।
- वर्ष में 12 अंक प्राप्त करें।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का वार्षिक सदस्यता शुल्क 250 रुपया है। और आजीवन सदस्यता शुल्क 2500 रुपया है।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का विदेश में वार्षिक सदस्यता शुल्क 3100 रुपया है।
- लेखक अपने विचार, लेख, कविता आदि प्रकाशन सामग्री प्रत्येक मास की 2-4 तारीख तक भेज दिया करें।
- जिस मास से शुल्क भेजेंगे तभी से सदस्यता प्रारम्भ होगी।
- नमूना कॉपी के लिए रु. 20 का धन-आदेश द्वारा अग्रिम भेजें।
- प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें और उत्तर चाहने वाले व्यक्ति दोहरा कार्ड या टिकट भेजें।
- प्रत्येक पत्र-व्यवहार में अपना पता भी हिन्दी में साफ-साफ लिखा करें।
- आपके सुझाव अपेक्षित हैं।

■ **प्रबंध संपादक**

'विश्ववारा संस्कृति' : सदस्यता आवेदन पत्र

नाम : ....

उम्र : .... दिनांक : ....

पता : ....

....

शहर : .... राज्य : .... पिन कोड : ....

फोन : .... मोबाइल : ....

नगद/चैक/मनी आर्डर/डीडी संख्या : ....

संरक्षक/आजीवन/पंच वर्षीय/वार्षिक सदस्यता हेतु संलग्न है।

चैक-मनी आर्डर 'आर्य समाज' नोएडा के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया' नोएडा, सेक्टर-33 में खाता संख्या : 1483010100182, IFSC-UTB10SCN560 में जमा कराकर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें-

प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 9555779591

ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

आयोजित कार्यक्रम

5 अप्रैल : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी का जन्मदिन रामनवमी बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज नोएडा में मनाया गया तथा गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों को उनके आदर्श व्यक्तित्व के बारे में बताया गया।

6 अप्रैल : महाशह राजपाल बलिदान दिवस पर समस्त पदाधिकारियों एवं गुरुकुलवासियों की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई और उनके उपकारों को ब्रह्मचारियों को बताया गया। हमारे गुरुकुल के छात्रावास का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

19 अप्रैल : महात्मा हंसराज जयंती के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा उनके आदर्श व्यक्तित्व को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

26 अप्रैल : पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की जयंती आर्य गुरुकुल नोएडा में मनायी गई।

5 मई : 'अग्निहोत्र' एक अध्ययन का विमोचन : डिफेन्स कालोनी आर्य समाज में डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (पूर्व सचिव संस्कृत अकादमी, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत खालसा कॉलेज दिल्ली) की पुस्तक अग्निहोत्र (एक अध्ययन) का विमोचन किया गया। सौजन्य श्री योगेश मुञ्जाल ने अपने माता-पिता महात्मा सत्यानंद मुञ्जाल, श्रीमती पुष्पावती मुञ्जाल की स्मृति में गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया गया।

आगामी कार्यक्रम

14 मई : मूर्धन्य विद्वान स्वामी दीक्षानंद जी की पुण्यतिथि का कार्यक्रम अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के सैजन्य से तपोवन आश्रम देहरादून में आयोजित किया जा रहा है।

28 मई : वीर सावरकर जयंती आर्यसमाज नोएडा में मनाई जाएगी।

31 मई : क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा की पुण्यतिथि आर्यसमाज नोएडा में मनाई जाएगी।

आर्ष गुरूकुल, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा

प्रवेश-सूचना

गुरूकुल में नवीन सत्र 2017-18 के लिए अप्रैल 2017 में प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद लखनऊ एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित होगा। गुरूकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था।

प्रवेश शुल्क	:	5100/-
भोजन शुल्क	:	1500/- प्रतिमाह

शिक्षा निःशुल्क

विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश फार्म प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

सम्पर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221

लिखित परीक्षा : 30 मई 2017, प्रातः - 10 बजे

साक्षात्कार लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण होने पर

कम्प्यूटर कर कार्य करते हुए आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारीगण। प्रणायाम करते आर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण एवं साथ में उपाचार्य मोहन प्रसाद जी।

ईश प्रार्थना करते हुए आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारीगण।

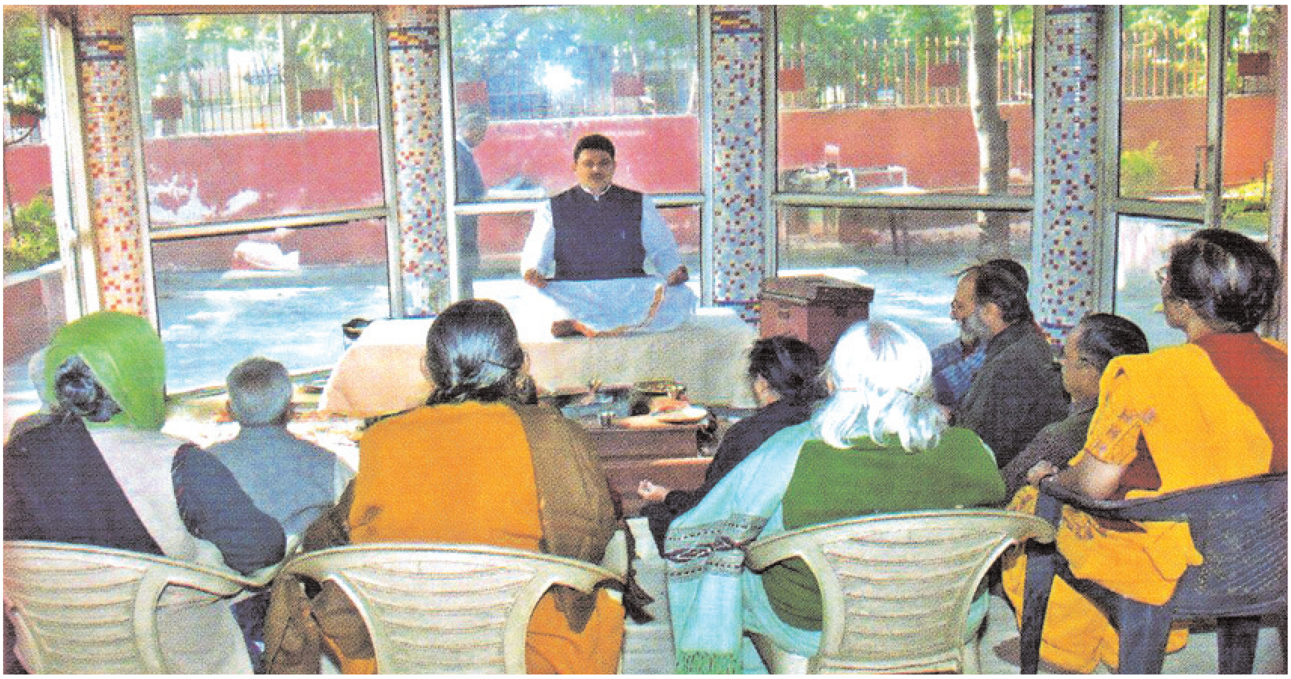

आर्य समाज नोएडा की यज्ञशाला में यज्ञ कराते हुए आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार। यज्ञ में उपस्थित वानप्रस्थ की माताएं एवं प्रबंध समिति के अधिकारीगण।

आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं.) का वार्षिक साधारण अधिवेशन व चुनाव 7-5-2017 को श्री आर.एल. लवानिया जी द्वारा सम्पन्न किए गए। जिसमें सर्वश्री रविन्द्र सेठ प्रधान, आर्य कै. अशोक गुलाटी महामंत्री, श्री विजेन्द्र कठपालिया उप प्रधान, श्रीमती लक्ष्मी सिन्हा उप प्रधान, श्री रविशंकर अग्रवाल उप प्रधान, श्री नरेन्द्र सूद- कोषाध्यक्ष। श्रीमती गायत्री मीना सदस्य सर्वसम्मति से चुने गए! तदर्थ बधाई- संपादक।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731